SAPTHAGIRI (HINDI)
ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:53, Issue: 2
July-2022, Price Rs.5/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका
जुलाई-2022
रु.5/-

आणिवर आस्थान
तिरुमल
दि. 17-07-2022

आं.प्र. राज्य के अमरावती में स्थित वेंकटपालेम् गाँव में ति.ति.दे. के द्वारा नव निर्मित श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में दि. 05-06-2022 से दि. 09-06-2022 तक अत्यंत वैभवपूर्णढंग से मंदिर का महा संप्रोक्षण कार्यक्रम संपन्न किया गया है। इस कार्यक्रम में विशाखा शारदा पीठाधिपति श्रीश्रीश्री स्वरूपानंदेंद्र सरस्वती स्वामीजी, उनके उत्तराधिकारी श्रीश्रीश्री स्वात्मानंदेंद्र सरस्वती स्वामीजी, आं.प्र. राज्य के राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन जी, धर्मस्व शाखा के मंत्रि श्री कोट्टु सत्यनारायण जी, ति.ति.दे. की न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी के साथ-साथ अन्य गण मान्य अधिकारिगण ने भाग लिया।

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता-१-३६)

हे जनार्दन! धृतराष्ट्र के पुत्रों की हत्या करके हमें क्या प्रसन्नता होगी? इन आततायियों को मारकर तो हमें केवल पाप ही लगेगा।

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।

(- गीता मकरंद)

अर्थात् - हे अर्जुन! जो पुरुष केवल मेरे लिये ही सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को करनेवाला है, मेरे परायण है, मेरा भक्त है, आसक्ति रहित है और सम्पूर्ण भूतप्राणियों में वैर भाव से रहित है वह अनन्यभक्तियुक्त पुरुष मुझ को प्राप्त करता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,०००/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१०००/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५३ जुलाई-२०२२ अंक-०२

विषयसूची

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी के वैशिष्ट्य	डॉ.पी.बालाजी	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	10
तारा	डॉ.के.एम.भवानी	14
मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्	श्री के.रामनाथन	18
महर्षि मरीची	डॉ.जी.सुजाता	20
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	22
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	25
वेंकटाचल अंजनाद्री और अंजनासुत हनुमान	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	31
श्रीमद्भगवद्गीता	श्री बी.राजीव रत्न	35
उच्च और अंतिम लक्ष्य को पाने के लिए नव युवकों का मार्गदर्शन	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालीया	36
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	39
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	40
आणिवर आस्थान	श्रीमती सुधा रंगराजन	43
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यड्लपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	45
'घी' अच्छे स्वास्थ्य के लिए आजीवन साथी	डॉ.सुमा जोषि	47
जुलाई महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	49
नीतिकथा - सत्संग का फल	श्रीमती के.प्रेमा रामनाथन	50
क्विज	डॉ.एन.दिव्या	51
चित्रकथा - झूठ मत बोलो	डॉ.एम.रजनी	52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

मुखचित्र - आणिवर आस्थान, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - उभयदेवेरियों सहित श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी, श्रीनिवासमंगापुरम्।

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

पर्यावरण परिरक्षण ही प्रथम कर्त्तव्य है।

समस्त जीव-जन्तुओं का जन्म-स्थल धरती है। इसे भारतीयों ने भूदेवी का नाम दिया है। यह भूदेवी पंचभूतों में यानी हवा, पानी, आग, आकाश और धरती आदि में सर्वाधिक अमृत तत्व है। इन पंचभूतों के बिना कोई प्राणी जीवित नहीं रह सकता है। इस धरती पर एक कण जीवियों से लेकर विशाल काय वाले हाथी तक इन्हीं से जीवित होते हैं। मनुष्य भी इन जीव-जंतुओं के साथ धरती माँ पर निर्भर है। दुर्भाग्य से मनुष्य के द्वारा अपने जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं को जुटाने में कुछ ऐसे विनाशकारी पदार्थों का अन्वेषण किया जो अपने जन्म-स्थल साक्षात धरती को ही हानि पहुँचा सकता है। ऐसे पदार्थों में प्लास्टिक सब से प्रमुख है। प्लास्टिक का अन्वेषण मनुष्य ने ही किया और आज वह उस का गुलाम बन गया। वह प्लास्टिक भूत बन कर धरती पर भयंकर प्रदूषण फैला रहा है। प्लास्टिक बोतल, स्ट्रा, प्लास्टिक कवर आदि के प्लास्टिक व्यर्थ पदार्थ जीवन की जगह विष बन कर धरती को प्रदूषित कर रहे हैं। शीघ्र नष्ट होने का गुण नहीं रखनेवाले इस विषैले पदार्थों से यथाशीघ्र मुक्ति मनुष्य को प्राप्त करनी होगी। यह मनुष्यों का बहुत बडा और कठिन अभियान होगा।

इस महान और कष्टदायक परियोजना को ति.ति.दे. ने शीघ्र ही अपने कंधों पर लिया है। कलियुग वैकुंठ और कलियुग के देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर के निवास-स्थल तिरुमल को प्लास्टिक-मुक्त क्षेत्र बनाने का बीडा उठाया है। सर्व प्रथम ति.ति.दे. ने प्लास्टिक से बनी वस्तुओं को तिरुमल में उपयोग करना निषेधित किया है। यह एक पर्यावरण हितकारी कदम है। प्लास्टिक कवर के स्थान पर कागज या कपडे की थैलियों का उपयोग करना शुरू किया। उसी प्रकार पेपर से बनाएँ स्ट्रा, गिलास, सीसा बोतल जैसी चिजों को उपयोग में लाना शुरू किया।

श्रीनिवास के जन्मस्थल तिरुमल में इन वस्तुओं का उपयोग न करके भक्तगण स्वच्छ-तिरुमल को बनाये रखने में ति.ति.दे. की सहायता करें। ति.ति.दे. के द्वारा अमल किए जानेवाले इस अभियान में समस्त भक्त भाग लेकर उसे सफल बनाने की प्रार्थना है। भक्तों के सहयोग और भागीदारी से ही यह अभियान सफल होगा। तभी हम भारतवासी भावि पीढियों के लिए सुरक्षित-स्वच्छ पर्यावरण को हिरासत में दे पाएँगे।

प्रकृति मानव की सहचरी है। प्रकृति के साथ सहचर करते हुए उस का परिरक्षण करना भी मानव का ही धर्म है। तभी उस के लिए तथा प्रकृति के लिए धरती एक सुंदर और सुखमय आवास स्थल बनकर रहेगी। यह संतुलित पर्यावरण के द्वारा ही संभव है। मानव का स्वस्थ जीवन भी इसी पर निर्भर होगा। हमारे महान ऋषि-मुनियों ने प्रकृति की सुरक्षा के अनेक उपदेश दिए हैं। साथ ही यज्ञ आदि द्वारा वायु प्रदुषण को समाप्त करके पर्यावरण को शुद्ध किए जाने की वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान किया है। सनातन हिंदू धर्म पर्यावरण हितकारी यही संदेश देता है। भारतीय संस्कृति का यही मूल मंत्र है।

सर्वेजनाः सुखिनो भवंतु।

स्मरणात् सर्वपापघ्नम् स्तवनादिष्टवर्षिणम्।
दुर्शनान्मुक्तिदम् चेशम् श्रीनिवासम् भजेऽनिशम्।।

श्री श्रीनिवास स्वामी का स्मरण करने से बस सभी पाप मिट जायेंगे। इस देवता का कीर्तन करेंगे तो बस- सभी इच्छाएँ पूरी हो जायेंगी। इस देवदेव के एक मात्र दर्शन से मुक्ति मिल जाती है। ऐसे श्रीनिवास जी का हर दिन स्मरण करूँगा। कलियुग में वैकुंठवासी श्री महाविष्णु ही अखिलांड कोटि ब्रह्माण्ड नायक श्री वेंकटेश्वर स्वामी अवतार ग्रहण करके प्रतिदिन भक्तों को दर्शन देते हुए अनुग्रहीत कर रहे हैं। एक पल के लिए ही सही श्री श्रीनिवास स्वामी के दिव्यमंगल मूर्ति के दर्शन करने के लिए बहुतेरे भक्त श्रीनिवासमंगापुरम क्षेत्र की यात्रा करने के लिए आते रहते है। पुकारने पर तुरंत साक्षात्कार देनेवाले वरप्रदाता श्रीनिवासमंगापुरणम् श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी इस पवित्र स्थल में विराजमान है।

श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी के वैशिष्ट्य

- डॉ.पी.बालाजी
मोबाइल - 8074598291

कलियुग वैकुंठ के रूप में भासित तिरुपति क्षेत्र के नजदीक में रहनेवाले श्रीनिवासमंगापुरम् में अखिलांड कोटि ब्रह्माण्ड नायक कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी अपने भक्तों को नित्यप्रति दर्शन प्रदान करते हुए उनके जीवन को चरितार्थ कर रहे हैं। श्रीनिवासमंगापुरम् तिरुमल क्षेत्र से दस या बारह किलोमीटर की दूरी पर है। तिरुपति क्षेत्र के मंदिरों में भगवान श्री श्रीनिवास के श्रीनिवासमंगापुरम् सर्वश्रेष्ठ और बहुत प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर बहुत पुराना और पवित्र मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण पल्लव के शासक के समय में हुआ था। इस मंदिर की शिल्प कला सौंदर्य अत्यंत सुंदर है। इस मंदिर में बसनेवाले श्रीनिवास स्वामी को देख ले तो वे स्वयं तिरुमल क्षेत्र में होनेवाले भगवान श्री श्रीनिवास स्वामी के दर्शन होने की अनुभूति मिल जाती है। इतिहासकारों ने कहा कि तिरुमल क्षेत्र में स्थित भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी का प्रतिबिंब ही भगवान श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी।

श्रीनिवासमंगापुरम् एक ऐतिहासिक पवित्र स्थल है। भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी और माता पद्मावती देवी कल्याण के पश्चात् इस क्षेत्र में छेः महीने तक रहे थे। कृतयुग में श्रीनिवासमंगापुरम् 'अगस्त्याश्रम' नाम से प्रसिद्ध था। उस समय 'अगस्त्य' नामक महर्षि ने यहाँ आश्रम बनाया था। इसलिए इसे 'अगस्त्याश्रम' नाम से पुकारा जाता है। उस समय अगस्त्याश्रम (श्रीनिवासमंगापुरम्) से कुछ दूरी पर 'नारायणवनं' नामक एक गाँव था। 'नारायणवनं' स्थल भी प्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र है। इस 'नारायणवनं' क्षेत्र में ही श्रीनिवास और पद्मावती देवी का विवाह हुआ था। विवाहानंतर भगवान श्रीनिवास और आपनी पत्नी श्री पद्मावती देवी के साथ तिरुमल जाने के लिए तैयार होते समय वराह स्वामी ने उनको एक सूचना दी थी। वराह ने कहा था कि आप जाते समय महर्षि अगस्त्य का आशीर्वचन लेकर जाये। भगवान श्रीनिवास और पद्मावती देवी ने ऐसा ही किया। उन्होंने श्रीनिवासमंगापुरम् पहुँच कर अगस्त्य महर्षि के आशिर्वाद लिए। उस समय महर्षि ने कहा था ''अब तिरुमल जाना मना है। आप नव वधु-वर हैं। आप दोनों इस क्षेत्र में (श्रीनिवासमंगापुरम्) रहकर एक पूजा पाठ करिए, आपको एक महत्वपूर्ण फल मिल जायेगा।'' महर्षि ने उन दोनों से छेः महीने तक ''कल्याणदीक्षा'' नामक व्रत रखने का उपदेश दे दिया। इस कारण से यहाँ के भगवान वेंकटेश्वरस्वामी ''श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी'' नाम से विख्यात हुए। ''कल्याणदीक्षा'' व्रत छः महीने करने के बाद इस क्षेत्र से श्रीनिवास और पद्मावती देवी समेत (स्वयं) पैदल रास्ते से तिरुमल पहुँच गये। इसलिए यहाँ बसनेवाले भगवान को ''श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी' नाम से स्मरण करते है, पूजा करते हैं फल पाते हैं। अविवाहित

भक्त यहाँ आकर भगवान के दर्शन करके और भगवान की कल्याण दीक्षा से प्राप्त कंकण धारण करते हैं। भक्तों का विश्वास है कि 'कल्याण कंकण' के धारण से सिर्फ छे महीनों में अविवाहित लडके-लडकियों का विवाह होता है। इस बढकर श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति अति सुंदर होती है।

भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी अपनी पत्नी श्री पद्मावती देवी समेत तिरुमल इसी रास्ते से पहुँच गए थे। इसलिए अधिक भक्तगण आज तिरुमल पहुँचने के लिए इसी मार्ग को चुनते हैं। पहले भक्त, पुजारी आदि तिरुमल पहुँचने के लिए इसी मार्ग का उपयोग करते थे। इसे 'श्रीवारि मेट्टु' मार्ग भी कहते हैं। श्रीवारि मेट्टु - श्रीनिवासमंगापुरम् के पास है। इसी मार्ग से अन्नमय्या, चंद्रगिरि किला से श्रीकृष्णदेवराय, मैसूर महाराज, अनेक मुनि और महर्षि इसी मार्ग से तिरुमल पहुँच गये हैं, ऐसे प्रमाण प्राप्त होते हैं। इस रूप में यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण पवित्र क्षेत्र है। श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी पर अनेक कवियों ने अनेक भक्ति गीत लिखे थे और स्वयं गा कर भगवान को सुनाया था। उन के गीतों में इस क्षेत्र के महत्व का वर्णन प्राप्त होता है। भक्त-प्रिय, मुँह माँगे वरदान देनेवाले भगवान श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी अर्चामूर्ति के रूप में रहनेवाले पवित्र क्षेत्र ही श्रीनिवासमंगापुरम् है। श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी के इस मंदिर के प्रांगण के मंडप अद्भुत शिल्प चातुरी से विराजित है। इतना ही नहीं बहुत सारे भक्तों की जीवन गाथाएँ इन से जुडी हुई हैं। यह क्षेत्र और यह मंदिर श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी की भक्तवत्सलता का साक्षी भी है।

'नित्य कल्याण-मंगल तोरण' नाम से सुविख्यात इस मंगापुरम् में श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी का नित्य कल्याणोत्सव संपन्न होता है। सिर्फ इतना ही नहीं, 'सुप्रभात सेवा', 'तोमालसेवा', 'सहस्त्र नामार्चन सेवा', 'एकांतसेवा' आदि नित्योत्सव, विशेष पूजा, सहस्रकलशाभिषेक आदि जैसे वारोत्सव, रोहिणी, आरुद्र, पुनर्वस, श्रवण जैसे नक्षत्रों में उत्सव, कोइल आळ्वार तिरुमंजनम्, उगादि आस्थानम्, पद्मावती परिणयोत्सव, ज्येष्ठाभिषेक, पवित्रोत्सव, ब्रह्मोत्सव आदि संवत्सरोत्सव भी श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी के मंदिर में मनाये जाते हैं। इन सारे संदर्भों में हर दिन एक उत्सव सा ही वातावरण बना रहता है। हर पहर खीरों, परमान्नों के साथ नैवेद्य भगवान को समर्पित किया जाता है। साल भर करीब 450 से अधिक उत्सवों का आयोजन इस मंदिर में किया जाता है।

वेंकटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किंचन।
वेंकटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

इस पूरे ब्रह्माण्ड में वेंकटाद्रि से समता रखनेवाला पुण्य क्षेत्र दूसरा कोई नहीं है। इससे बढ कर वेंकटेश्वर भगवान के समान कोई देव न भूतकाल में था और न ही भविष्य में हो सकता है। इतने महिमान्वित भगवान ही श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी है।

ॐ नमो वेंकटेशाय।

गतांक से

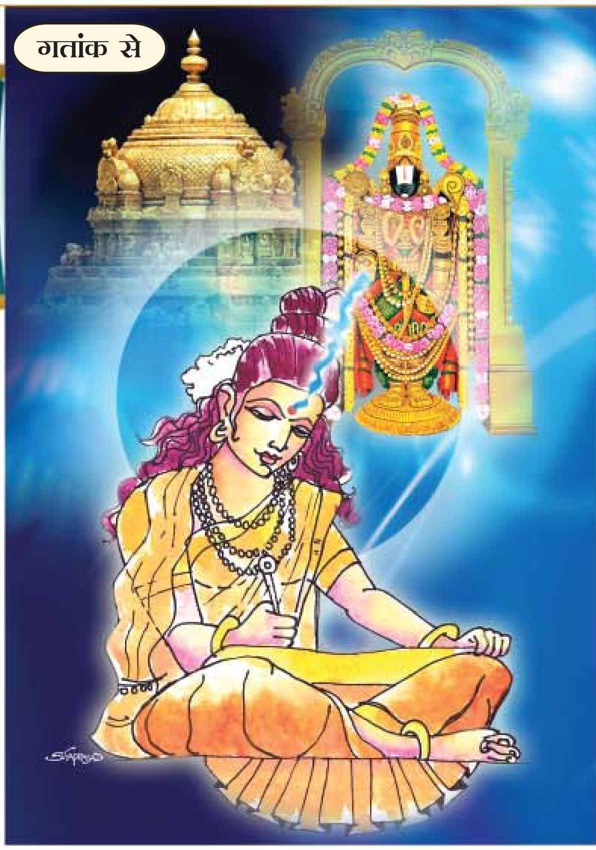

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 9849670868

ब्रह्म देव की विनति :

"हे श्वेत वराह रूपा! मेरी प्रार्थना को स्वीकार करके राक्षसों के संहार करने के लिए इस शेषगिरि पर्वत पर वास कीजिए। यहाँ पर अत्यंत प्रसिद्ध होकर जनता की पूजाओं को स्वीकार कर लीजिए।

युग-युगों तक मनुष्य आप की पूजा-वंदना करते रहेंगे। हे तात! मेरी यह विनति स्वीकार कर लीजिए।" ब्रह्म की इस विनति को सुन कर चक्री ने प्रसन्न होकर इस रूप में कहा। "हे जलज संभव! आप की इच्छा के अनुसार ही मैं अत्यंत विकृत एवं उग्र रूप में इस शेषाचल पर्वत पर बस जाऊंगा। आश्रित भक्तजनों की रक्षा करूँगा।"

यह सुनकर ब्रह्म विष्णु को नमस्कार करके लौट आये। श्वेत वराह स्वामी इसलिए शेषाचल पर प्रसन्न चित्त होकर निवास करते हुए भक्तजनों की रक्षा करते रहे।

इस प्रकार वैकुंठ, आदित्य मंडल, स्वर्ग में रहनेवाले हरि अत्यंत प्रसन्न चित्त से वेंकटाद्री पर रहने के लिए तैयार हो गए।

वेंकटाद्री के विविध नाम :

सूत महर्षि की बातें सुन कर मुनियों ने सूत से आगे पूछा। "हे सूत! शेषाद्री, क्रीडाद्री, वेंकटगिरि आदि ये तीन नाम एक ही पहाड को कब क्यों दिये गए। इस के क्या कारण हैं। कृपया हमें बताइए।" मुनियों की इस जिज्ञासा का समाधान करते हुए सूत ने इस रूप में कहा। "हे मुनिगण! ये तीन ही नाम नहीं है। बल्कि धरती पर शेषगिरि के लिए निमित्त के अनुसार अलग-अलग नामकरण किया गया है। इसलिए वे सारे वृत्तांत मुझे प्राप्त ज्ञान और समाचार के अनुसार मैं बताऊँगा। कृपया सुनिए।" सूत मुनि ने आगे उन्हें इस रूप में बताया।

चिंतामणी :

जन-जन की चिंताओं को तथा उन की मनौतियों को असीमित रूप से पूरा करते रहने से इस श्रीगिरि को चिंतामणी कहा गया है। मनुष्य मात्र के मन में उत्पन्न होनेवाली इच्छाओं की पूर्ति यह पर्वत करता है। इसलिए इसे 'चिंतामणी' कहा गया है।

ज्ञानाद्री :

ज्ञान से ही जन-जन सब कुछ प्राप्त करते है। इसलिए सब के मूलाधार ज्ञान प्रदान करनेवाले पर्वत होने के कारण इस का नाम धरती पर 'ज्ञानाद्री' रखा गया है।

तीर्थाचल :

जन-जनों की कामनाओं को तथा धनादि को प्रदान करनेवाले अनेक तीर्थ इस पर्वत पर रहने के कारण यह पर्वत 'तीर्थाचल' रूप में प्रसिद्ध हुआ है।

पुष्कर शैल :

निष्काम से तप करनेवाले मुनियों को पर्याप्त जल प्रदान करनेवाले पुष्करिणियों के होने से धरती पर इस पर्वत का नाम 'पुष्कर शैल' पड गया।

वृषभाद्री :

पूर्व यहाँ पर वृषभासुर नामक मुनि-कंटक राक्षस रहा करता था। उस ने इस पर्वत पर तप किया था। इसलिए अवनि में इस का नाम 'वृषभाद्री' पड गया।

कनकाचल :

मनुष्यों को अति सरल रूप में पहचानयुक्त इस के शिखर कनक वर्ण में कांतिमय दीखते हैं। इसलिए अवनि में इस का नाम 'कनकाचल' पडा है।

नारायणाद्रि :

पूर्व में नारायण नामक एक ब्राह्मण ने यहाँ तप किया था। इससे हरि संतुष्ट हुए। दर्शन भी दिये। उस बाह्मण के नाम से इस का नाम 'नारायणाद्री' पड गया।

श्री वैकुंठाद्री :

वैकुंठ में रहनेवाले क्रीडाचल को पक्षेंद्र के द्वारा लाये जाने के कारण इस का नाम 'श्री वैकुंठाद्री' पड गया।

नरसिंह गिरींद्र :

नारायण के हिरण्याक्ष का संहार करके अपने भक्त प्रह्लाद का उद्धार करने का स्थल होने के कारण इस का नाम 'नरसिंह गिरींद्र' पड गया।

अंजनाद्री :

संतान के लिए अंजनी देवी ने इस पर्वत पर तप किया। हनुमान को वर-पुत्र के रूप में प्राप्त किया। तब देवताओं ने अत्यंत प्रसन्न होकर इस पर्वत को 'अंजनाद्री' नाम दिया।

वराहाद्री :

पूर्व में यहाँ पर वराह समूह रहा करता था। श्रीहरि के वराहवतार धारण करने के बाद यही स्थल उन्हें अच्छा लगा। तब से इस का नाम 'वराहाद्री' पड गया।

नीलाद्री या नीलगिरींद्र :

नील नामक एक मुनि पहले इस पर्वत पर निवास करते थे। उन्हीं के नाम से इस का नाम अवनी में 'नीलाद्री या नीलगिरींद्र' पड गया।

श्रीनिवास पर्वत :

श्री के लिए वास स्थल बन कर, भूलोक में मनुष्यों के उद्धार के लिए हरि यहाँ पर श्रीनिवास के रूप में बसे। इसलिए अवनि में इस पर्वत का नाम 'श्रीनिवास पर्वत' पडा है।

आनंदाचल :

लक्ष्मी को हृदय पर धारण करके जन-जन को संपदाएँ देते हुए श्री नारायण आनंद से रहनेवाले इस पर्वत को 'आनंदाचल' कहा गया है। स्वामी के मंदिर के मुख्यालय को आनंदनिलय भी कहा जाता है।

श्री सद्गिरि :

श्री के साथ श्रीहरि वैभवपूर्ण रूप से इस पर्वत पर वास करने के कारण अवनि में इस का नाम 'श्री सद्गिरि' पडा है।

क्रीडाचल :

श्रीहरि सिरि के साथ और उन के परिवार जनों के साथ आनंद से क्रीडा करने के कारण अवनि में यह 'क्रीडाचल' के रूप में कीर्तिमान बन गया।

गरुडाद्री :

गुरुभारवाले इस पर्वत को गरुड वैकुंठ से धरती पर ले आये। इसलिए यह 'गरुडाद्री' के रूप में कीर्तिमान बन गया।

शेषाचल :

शेषाकृति में रहते विशेष को प्राप्त करके सर्वशेषी भगवान को अपने ऊपर भूषण के रूप में ढोनेवाले पर्वत होने से यह 'शेषाचल' नाम से लोक प्रचलित हुआ।

वृषाद्री :

अनेक धर्मों का मूलाधार और जन-जनों को धर्म सिद्धि प्रदान करने के कारण धरती में इस का नाम 'वृषाद्री' पडा है।

वेंकटाद्री :

जन-जनों के संकटों को दूर करते अमृततुल्य जीवन और संपदाओं को प्रदान करनेवाले पर्वत होने के कारण इस का नाम 'वेंकटाद्री' पडा है।

इस प्रकार से कल्प भेद से इस पर्वत को अनेक नाम प्राप्त हुए। उस पर्वत की महिमा के बारे में बताना- सुर-गुरु, चतुर्मखी, षड्मुखी, सहस्रमुखी लोगों के साथ भी संभव नहीं है। ऐसे पर्वत पर श्रीमन्नारायण वास करते रहे। ऐसे में इस गिरि के उत्तर भाग में एक दिन रमा समेत स्वामी श्रृंगार-विहार और विनोद करते समय एक घटना हुई।

मुनियों की यज्ञ-शाला :

रमा के साथ विहार करनेवाले रमापति ने देखा कि तप करनेवाले कुछ मुनिगण अपनी पत्नियों के साथ उस वेंकटाद्री पहाड पर दिखाई दिए। कंद, मूल, फल, फूलों के वृक्षों को, अनेक तीर्थों को उस पर्वत पर देख कर वे अत्यंत प्रसन्न हुए। वहीं पर सुख से रहने का संकल्प किया। कुटीर बनायी। अपनी कुटिरों में रहते यज्ञ करने वाले उनको लेकर हरि ने लक्ष्मी से इस रूप में कहा। ''हे जलाब्धि कन्या! निर्जन इस महास्थल में कुटीर बना कर कोलाहल करनेवाले इन को देखकर अच्छा लग रहा है।

इन पर अवश्य दया करनी चाहिए।'' संतोष के साथ आगे इस रूप में कहा। ''हे सती! देखो वे यज्ञ-शालाएँ, वे सद्धर्मशालाएँ, यहाँ देखो अग्निशाला। हे सखि! वह हविर्भाग शाला, पत्नीशाला, यह जजमान शाला है वहाँ देखो। वह महानस गृह, वे अग्नि पात्र हैं, पशुओं को बांधकर रखनेवाली वे पंक्तियाँ है, वे ऋत्विक हैं, ये नधर्वय हैं, वह सोमयाजी और वह सोमिदेवी है। अच्छी तरह देखो। सिरि! यह श्रौत कर्म करनेवाले सभी मुझ से ही पैदा हुए हैं। सवन स्वरूपी मेरे लिए अत्यंत प्रीति से वे यज्ञ करनेवाले हैं। इन की कर्म निष्ठा को आनंद से अब देखना चाहिए।

यज्ञशाला पर जाकर उन के द्वारा किए जानेवाले यज्ञ करने की विधि को देखना चाहिए।

हे चंद्रवदनी! चलो। इस के लिए तुम को वेश्या का वेश धारण करना पडेगा। अपने नटकटी व्यवहार दिखाते तुम को देखने मैं विट के रूप में वहाँ आकर यज्ञ कुंड के पास ब्राह्मणों के द्वारा भक्ति से हविस के समर्पण करते समय मैं उसे ग्रहण करूँगा। वहाँ मेरी प्रशंसा सुनते तुम को भी बहुत अच्छा लगेगा।''

क्रमशः

(मिथ की महिला चरित)

तारा

- डॉ.के.एम.भवानी,
मोबाइल - 9949380246.

आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण में राम कथा को ही महत्व दिया। राम कथा के विस्तार के लिए उन्होंने अनेक पात्रों का सृजन किया है। क्यों कि पात्र-चित्रण काव्य का मुख्य अंग है। इस के बिना काव्य पूरा नहीं हो सकता है। पात्रों के चित्रण से कथा का विस्तार होता है। काव्य की लक्ष्य-पूर्ति भी होती है। फिर भी काव्य में कुछ पात्र प्रमुख और कुछ गौण होते हैं। फिर भी काव्य की समग्रता में सभी का योग होता है। ऐसे पात्र किस संदर्भ में आए, इससे कोई मतलब नहीं है। पूरे काव्य में उनका अस्तित्व बहुत कम दिखाई पड़ता है मगर उसका महत्व को भूला या अनदेखा नहीं कर सकते हैं। ऐसे स्त्री पात्रों में प्रमुख है तारा। संपूर्ण रामायण में तारा हमें सिर्फ़ तीन-चार बार दिखाई देती है। लेकिन जब भी दिखती है, अपनी चतुर भाषण के कारण गहरा प्रभाव डालती है।

तारा वानर राजा वाली की पत्नी है। पहले पहल तारा किष्किंधा कांड में पति वाली को उपदेश के साथ चेतावनी देती हुई सामने आती है। सुग्रीव महान बलशाली एवं भाई वाली से हार जाने के बाद भी तुरंत दुबारा वाली से युद्ध करने आता है तब तारा वाली से कहती है कि जासूसों के द्वारा युवराज अंगद को समाचार मिला कि अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र श्रीराम और लक्ष्मण से सुग्रीव की दोस्ती हो गई है। श्रीराम साधारण मानव नहीं है। वह साक्षात् भगवान है। सुग्रीव श्रीराम के भरोसे पर ही वाली को युद्ध के लिए दुबारा ललकार रहा है। इसलिए वाली को सोच-समझ कर आगे बढ़ना होगा। सुग्रीव तो वाली का छोटा भाई है और वह वाली को बहुत इज़्ज़त भी देता है। वाली के लिए सुग्रीव से बढ़कर बंधु सारे भूलोक में और कोई नहीं है। इसलिए वाली उन्हें माफ कर, भाई के प्रति प्यार दिखाते हुए, उन्हें युवराज बनाने से दोनों भाई खुशी से रह सकते हैं। दोनों भाई मिलजुल कर रहना उन दोनों को ही नहीं, किष्किंधा राज्य के लिए भी क्षेम दायक है। लेकिन वाली तारा की इन बातों पर ध्यान नहीं देते हुए तारा को ही समझाता है कि उसे श्रीराम से कोई दुश्मनी नहीं है। तो वह मुझे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाएँगे फिर भी तारा के इतना समझाने के कारण वाली उसे यह वचन देता है कि वह युद्ध में सुग्रीव को हराएगा, लेकिन उसे नहीं मारेगा।

जब श्रीराम के हाथों से वाली बाण घात होकर अंतिम साँसें गिनते हुए पृथ्वी पर पड़ा रहता है तब तारा बहुत दुःखित हो जाती है। वह रोती हुई वाली से कहती है कि- ''हे वानर राजा! मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि सुग्रीव को वानर राज्य से बहिष्करण मत करो। उसकी पत्नी रूमा का हरण मत करो। मगर तुम ने मेरी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। इसीलिए आज यह नौबत आ पड़ी है। तुम्हारे कुशल-मंगल केलिए मैंने तुम्हें कई बार बहुत बातें बताई। मगर तुम ने मेरी एक न सुनी। हे राजा! तुम ने अपने रूप और यौवन से कई स्त्रियों के मन को मोह लिया, और अपने वश में कर लिया। लेकिन तुम किसी के वश में नही आये। तुम्हारे कुकर्म के कारण आज तुम्हारी यह दुर्दशा है।''

''हे वीर! तुमने अंगद को बहुत लाड़-प्यार से पाला। उसे आज तक सुख के अलावा दुःख का नाम भी नहीं

मालूम है। अब वह आपके बिना कैसे रहेगा? हे प्राण नाथ! अपने बेटे को पास ले लो। उसे आशीर्वाद दो। तुम दीर्घ यात्रा पर जा रहे हो इसलिए अंगद से जो बातें कहना हैं, कह डालो।''

''हे वानर राजा! मैं इतना चिल्ला-चिल्लाके बोल रही हूँ लेकिन तुम एक का भी उत्तर नहीं दे रहे हो। मैं या अंगद ने तुम्हारे प्रति कभी अनुचित बर्ताव नहीं किया है। फिर तुम यह दीर्घ यान क्यों कर रहे हो। मैंने कभी जाने या अनजाने में तुम्हारे साथ कोई भूल की हो, तो मुझे माफ़ करो। मैं तुम्हारे पैरों पर सिर रख कर प्रार्थना कर रही हूँ।''

इस तरह तारा दुःख से विकल होकर वाली के साथ सहगमन करना चाहती है लेकिन महावीर हनुमान उसे समझाने की कोशिश करता है।

पति वाली के शव से लिपटकर बहुत रोने के बाद तारा की नज़र श्रीराम पर पड़ती है। तारा श्रीराम के रूप नहीं देखने पर भी सूरज की तरह प्रकाशित मूर्ति को देखकर पहचान लेती है कि वह भगवान श्रीराम ही है। तब वह श्रीराम से इस तरह कहती है ''हे श्रीराम! तुम्हें कोई नहीं हरा सकता। तुम्हारी वीरता को कोई अनुमान भी नहीं लगा सकता। तुम जितेंद्रिय हो। उत्तम धर्म स्वरूप हो। मेरी आँखों को तुम श्री महाविष्णु जैसा दिख रहे हो।''

''हे वीर! तुमने जिस बाण से मेरे पति को मारा, उसी बाण से मुझे भी मारो। मैं भी अपने पति के पास पहुँचना चाहती हूँ। मेरे बिना वाली सुख से नहीं रह सकता है। हे राज कुमार! तुम यह मत सोचना कि मुझे मारने से तुम्हें स्त्री हत्या का दोष नहीं लगेगा। पति-पत्नी दोनों अलग-अलग नहीं है, एक ही है इसलिए मेरा यह शरीर वाली का ही शरीर है। दुनिया में बुजुर्ग कहते हैं कि कन्या (पत्नी) दान से बढ़कर बड़ा दान नहीं है इसलिए हे वीर! तुम धर्म का अनुसरण करके मुझे मेरे पति के पास भेज दो।''

''हे राजा! मैं पति के बिना अनाथ हूँ इसलिए ऐसी हालात में मुझे मेरे पति के पास भेज देना तुम्हारा धर्म है।''

तारा की बातों को सुनकर श्रीराम उसे समझाते हैं कि ''तारा! तुम इस तरह के विपरीत विचार मत करो। यह समस्त लोक ब्रह्म की सृष्टि है। सुख और दुःख वे ही देते हैं। आनेवाले भविष्य में तुम पहले की तरह खुश प्राप्त कर सकती हो। तुम्हारे पुत्र अंगद युवराज बनेगा। तुम महान वीर की पत्नी हो। पराक्रमी की पत्नी कभी विलाप नहीं करती है। विलाप करने से मरे हुए लोगों को कोई लाभ नहीं होता है।'' इस प्रकार श्रीराम कई प्रकार से समझाने पर तारा कुछ सांत्वना पाती है।

श्रीराम की सूचनाओं के अनुसार सुग्रीव और अंगद के द्वारा वाली की अंत्येष्टि संस्कार किया जाता है। वाली की मौत के बाद सुग्रीव वानर राजा बन जाता है। इतने में बारिश का मौसम आने के कारण वह श्रीराम से चार महीने के बाद मिलने को कहकर अपने किष्किंधा राज्य में आ जाता है। भोग लालसों में डूबकर बरसात खत्म होते ही दिए हुए वचन के अनुसार श्रीराम से मिलने में विलंब करता है। तब श्रीराम के आदेशानुसार लक्ष्मण सुग्रीव को वचन निभाने की याद दिलाने के लिए किष्किंधा राज्य में प्रवेश करता है। उस समय लक्ष्मण बहुत क्रोधित होता है। लक्ष्मण के आगमन को जानकर सुग्रीव बहुत घबरा जाता है। वह उस हालात में लक्ष्मण के सामने जाना उचित न समझकर तारा को लक्ष्मण से अनुनय की बातें करने को कहता है। तब सुग्रीव को बचाने की कोशिश में तारा जो बातें कहती हैं, वे तारा के चतुर भाषण के द्योतक हैं।

तारा क्रोधित लक्ष्मण को मनाती हुई कहती है- ''हे लक्ष्मण! सुग्रीव श्रीराम को दिया वचन कभी नहीं भूला है। वह पूरे वानर जो जहाँ भी हो, सभी को किष्किंधा राज्य में पहुँचने का आदेश दिया है। सुग्रीव आपके शुभ चिंतक है। दिन-रात आपका शुभ ही चाहता है। तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास करना है। सुग्रीव के द्वारा युद्ध की तैयारी में कुछ विलंब हुआ है लेकिन अश्रद्धा नहीं हुआ है। सुग्रीव आपके द्वारा हुआ महोपकार को कभी भूला नहीं है। हम सब वानर हैं। स्वभाव से चंचल हैं। लक्ष्मण तुम कभी काम पीड़ित नहीं हुए हो, इसलिए तुम्हें उसके बारे में मालूम नहीं है। लेकिन हम वानर हैं। अपने इंद्रियों पर काबु रखना हमारे लिए आसान नहीं है इसलिए सुग्रीव के द्वारा थोड़ा विलंब हो गया है। इसके लिए भाई समान सुग्रीव पर इतना क्रोधित होना तुम्हारे जैसे उत्तम पुरुष को शोभा नहीं देता है।''

हे लक्ष्मण! पूर्व ब्रह्मर्षि विश्वामित्र तप करते समय मेनका को देखकर काम मोहित होकर दस साल उसके साथ गुजारे। श्रेष्ठ और महान विश्वामित्र भी काल के वश होने पर हम वानरों के बारे में क्या कहना? सुग्रीव बरसात के चार महीनों को एक दिन की तरह बिता दिया। समय को पहचान नहीं पाया। श्रीराम को सुग्रीव के इस भूल को माफ़ करना पड़ेगा। लक्ष्मण! तुम हमारी स्थिति, हालातों को समझने की कोशिश करो। साधारण मानव की तरह गुस्सा मत करो। तुम्हारे जैसे बुद्धिमान, उत्तम पुरुष क्रोध का वश होना शोभा नहीं देता है। मुझे राम बाण की शक्ति मालूम है। मैं सुग्रीव की ओर से तुम से क्षमा प्रार्थना कर रही हूँ।''

''हे लक्ष्मण! राम कार्य के लिए सुग्रीव रूमा को, मुझे, अंगद को ही नहीं, राज्य के साथ-साथ समस्त संपत्तियों को भी छोड़ देगा। यह सत्य है। सीता को पाने के लिए रावण के साथ-साथ बलशाली दानवों को मारना भी जरूरी है इसलिए सुग्रीव अरण्यों और पहाड़ों में भी रहनेवाले करोड़ों वानरों को एकत्र करके किष्किंधा में बुलाया। सुग्रीव उन सभी के पहुँचने का इंतजार कर रहा हैं। करोड़ों वानर, भालू, लंगूर आदि के साथ आज ही

सभा रखेंगे। इसलिए तुम गुस्से को छोड़ दो। लक्ष्मण! तुम्हें देखकर अंतःपुर की स्त्रियाँ डर से कांप रही हैं। रूमा के साथ मैं भी डर रही हूँ कि सुग्रीव का क्या होगा? इसलिए तुम सुग्रीव पर क्रोध छोड़कर अंतःपुर में प्रवेश करो। तुम सदाचार संपन्न हो लेकिन मित्र की पत्नी से बोलने में कोई दोष नही है इसलिए अंदर आओ। सुग्रीव को देखकर उससे बात करो।''

इस प्रकार धर्म और विनय से बोली तारा की बातों से लक्ष्मण संतुष्ट हुए। तारा अपनी बातों से लक्ष्मण को मनाने में सफल हुई। इस घटना के बाद रामायण में फिर तारा हमें दिखाई नहीं देती है। मगर जब भी हमें समयानुसार चतुर भाषण करने की आवश्यकता पड़ती है तब हर वक्त हमें कुशल तारा का नाम याद आता ही रहता है। क्योंकि तारा के चतुर भाषण कौशल के बारे में महर्षि वाल्मीकि ने खुद उसके पति वाली के मुँह से इस तरह कहलाया-

राम बाण से घायल होकर वाली अंतिम साँसें गिनते समय उन्हें आँखों के सामने सुग्रीव दिखाई देता है। तब वाली सुग्रीव को अपने पास बुलाकर उन्हें कई बातें समझाता है उस समय वह सुग्रीव से तारा के बारे में इस प्रकार कहता है- ''हे सुग्रीव! तारा बहुत सूक्ष्म बातों को भी बहुत सोच-समझ कर निर्णय लेती है। अचानक आनेवाली मुश्किलों को भी पहले से ही वह जान लेती है। इसलिए तारा जो भी बोलती है, वे सभी काम तुम जरूर करते रहना। तारा की बातें कभी गलत नहीं होती हैं। इसलिए तुम वह जिसे अच्छा बोलेगी, वह काम तुम आँखें बंद कर, कर देना।''

वाली की इन बातों से तारा के चरित्र पर प्रकाश पडता है। तारा वानर स्त्री होते हुए भी एक सुशील, सुंदर और कुशल बोली बोलनेवाली पति-परायन स्त्री के रूप में रामायण में चित्रित हुई है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'

५. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

(गतांक से)

मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्

तमिल मूल - श्री टी.के.वी.एन.सुदर्शनाचार्या

हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

सेन्ड्रदु इलंगै मेल् सेव्वेतन् सीट्रत्ताल्
कोन्ड्रदु इरावणनै कूरुंगाल् - निन्ड्रदुवुम्
वेयोंगु तण्सारल् वेंगडमे विण्णवर् तम्
वायोंगु तोल्पुगऴान् वन्दु।। (2206)

कठिन शब्दार्थ - इलंगै-श्रीलंका, सीट्रम-क्रोध, कोन्ड्रदु-मारना, वेय-बांस, तण-ठंडा, पुगऴ्-कीर्ति।

भावार्थ - आल्वार कवि भूदत्ताळवार के मन में भगवान के विष्णु के रामावतार के प्रति बडी आसक्ति थी। क्योंकि भगवान विष्णु ने अपने इस अवतार के द्वारा अन्याय का अंत करके न्याय की पुनःस्थापना की थी। इसलिए कवि के मन में उनके प्रति बड़ा लगाव है। वे अपने मनोभाव को इस कविता में प्रकट करते हैं। साथ ही वे सोचते हैं ऐसी कीर्ति प्राप्त ईश्वर वेंकटगिरि में आकर निवास करते हैं। वे गाते हैं, ''देवगण अपने मुँह से आप की महान कीर्ति गाते हैं। ऐसे महान कीर्तिवान एवं पुरातन महत्व के भगवान श्री महाविष्णु ने अपने श्रीरामावतार में क्रोधित होकर लंका पर हमला किया। उनके क्रोध ने अत्याचारी रावण को मार दिया। उसके बाद वे अपने भक्तों को मुक्ति दिलाने के विचार में बांसों के पेडों से भरे तथा ठंडी हवा बहानेवाली वेंकटगिरि पर आकर वास करने लगे।''

मतलब यह है कि भगवान विष्णु अपने रामावतार में अन्याय का अंत करके न्याय की स्थापना करने के बाद अपने भक्तों को दर्शन देने और उनको दुःखों से मुक्त करने के लिए वेंकटगिरि पर आकर बस गए।

मनत्तुळ्ळान् वेंगडत्तान् माकडलान् मट्ढम्

निनैप्परिय नीळरंगत् तुळ्ळान् - एनैप्पलरुम्

देवादी देव नेनप्पडुवान् मुन्नोरुनाळ्

मावाय् पिळन्द मगन्।। (2209)

कठिन शब्दार्थ - मनम्-मन, उळ्ळान-रहने वाला, मा कडल-क्षीर सागर, निनैप्पु-याद करना, अरंगम्-श्रीरंगम।

भावार्थ - आल्वार कवि भूदत्ताल्वार का विचार है कि भगवान श्री महाविष्णु असुरों का अंत करने वाले हैं। वे अपने भक्तों के दुःखों को दूर करके उन्हें मुक्ति दिलाने वाले हैं। इसलिए वे वेंकटगिरि पर आकर वास करते हैं। वे गाते हैं, ''भगवान विष्णु को उनके भक्त बडी श्रद्धा से देवों के देव कहकर स्तुति करते हैं। वे क्षीर सागर पर निवास करने वाले हैं।

उन्होंने एक बार घोडे के रूप में आकर केसी नामक राक्षस के मुँह को फाडकर मार दिया था। ऐसे महान ईश्वर श्रीरंगम नामक पवित्र स्थान में स्थित मंदिर में विश्राम करने वाले हैं।

वे ही वेंकटगिरि में आकर अपने भक्तों को दर्शन देते हैं। ऐसे श्रेष्ठ ईश्वर श्री महाविष्णु अब मेरे मन में आकर बसे हैं।''

मतलब यह है कि वेंकटगिरि में आकर वास करनेवाले भगवान श्री महाविष्णु अपने भक्तजनों के दुःख को दूर करके सुख पहुँचाने वाले हैं।

तुणिन्दु सिंदै तुऴायलंगल् अंगम्

अणिन्दवन्पेर् उळ्ळत्तु पलकाल् - पणिन्दुवुम्

वेय् पिरंगु सारल् विरल् वेंगडवनैये

वाय्तिरंगळ् सोल्लुम् वगै।। (2214)

कठिन शब्दार्थ - सिंदै-मन, तुऴाय्-तुलसी, अलंगल्-माला, उळ्ळम्-हृदय, पणिदल्-नमस्कार करना, वेय्-बांस, वाय्-मुँह।

भावार्थ - यह तो सत्य है कि जिसे मन सोचता है उसे मुँह प्रकट करता है और हमारे शरीर के अंग उसे कार्यान्वित करते हैं। यह सोचकर आल्वार कवि भूदत्ताल्वार कहते हैं कि उनके मन, वचन और कार्य में भगवान विष्णु के प्रति भक्ति प्रकट होती है। इसलिए कवि गाते हैं, ''मेरे मन ने निश्चय कर लिया है कि तुलसी माला पहने भगवान विष्णु के पवित्र नाम को सदा ध्यान करते रहें। मेरे तन ने निश्चय कर लिया है कि भगवान विष्णु को सदा नमन करते रहें और मेरे मुँह ने निश्चय कर लिया है कि वेंकटगिरि में स्थित भगवान विष्णु की महान कीर्ति को सदा गाते रहें। इसका मतलब यह है कि मानव का जन्म बडे दुर्लभ से प्राप्त होता है। प्राप्त ऐसे जन्म में मनसा-वाचा-कर्मणा सदा भगवान के ध्यान में लगे रहना ही श्रेष्ठ है।

क्रमशः

महर्षि मरीचि परमपिता ब्रह्म के प्रथम मानस पुत्रों में से एक हैं जिनकी उत्पत्ति ब्रह्म के मन से हुई मानी जाती है। जिसके कारण उनका नाम 'मरीचि' पड़ा। प्रथम मनु स्वयंभू के मन्वन्तर में जो 7 ऋषि (मरीचि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अंगिरा, अत्रि एवं वशिष्ठ) सप्तर्षि कहलाये वे सभी ब्रह्मपुत्र

ऋषि-मुनि

महर्षि मरीचि

- डॉ.जी.सुजाता, मोबाइल - 9494064112.

थे। मरीचि सहित अन्य सप्तर्षियों की गिनती 20 प्रजापतियों में भी की जाती है। अन्य तीन प्रजापति हैं - नारद, भृगु और प्रचेता। इनकी महानता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अर्जुन को गीता का ज्ञान देते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं- 'हे पार्थ! आदित्यों में मैं विष्णु हूँ, तेज में मैं सूर्य हूँ, मरुतों में मैं मरीचि हूँ और नक्षत्रों में मैं चंद्र हूँ। यही कारण है कि इन्हें प्रजापतियों में श्रेष्ठ समझा जाता है।

ब्रह्मदेव के अन्यतम मानस पुत्र होने के कारण तथा सभी शक्तियों से संपन्न होने के कारण उन्हें 'समब्रह्म' अर्थात् ब्रह्म के समान कहा जाता है, मरीचि को उनकी महानता के कारण साक्षात् द्वितीय ब्रह्म भी कहा जाता है। इनकी यह विशेषता भी है कि यह भगवान ब्रह्म की भांति सृष्टि संरचना में सदैव व्यस्त रहते हैं। इन्द्र सभा में ये अक्सर उपस्थित रहते हैं व दंडनीति पर व्यवस्था देते रहते हैं। इन्होंने ही भृगु ऋषि को दण्डनीति की शिक्षा प्रदान की। सुमेरु के पर्वत पर निवास करने वाले मरीचि ऋषि का वर्णन महाभारत में चित्र शिखंडी के रूप में आता है। पुराणों में महर्षि मरीचि की तीन पत्नियों के बारे में लिखा गया है। इनकी प्रधान पत्नी प्रजापति दक्ष की पुत्री 'सम्भूति' थी। इनकी दो और पत्नियाँ थी- कला और उर्णा।

उर्णा का ही दूसरा नाम धर्मव्रता था जिसे मरीचि ने मिथ्याबोध के कारण पाषाण बनने का श्राप दे दिया। धर्मव्रता ने इसका विरोध किया और स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने के लिए उसने अपना बलिदान दे दिया। इस बलिदान से भगवान विष्णु प्रसन्न हुए और वरदान दिया कि उसका ये पाषाण रूप 'देवशिला' नाम से संसार में प्रसिद्ध होगा।

उनकी पत्नी कला से उन्हें कश्यप एवं पर्णिमास हुए। कला कर्दम ऋषि की पुत्री और ऋषि कपिल की बहन थी। ब्रह्म के पोते और मरीचि के पुत्र कश्यप ने ब्रह्म के दूसरे पुत्र दक्ष की 16 पुत्रियों से विवाह किया। मुख्यतः इन्हीं कन्याओं से सृष्टि का विकास हुआ और कश्यप सृष्टिकर्ता कहलाए। देव, दैत्य, असुर, नाग, सर्प इत्यादि सभी जातियाँ महर्षि कश्यप की ही संताने हैं। कश्यप हिन्दू धर्म के सबसे महान ऋषियों में से एक माने जाते हैं। इन्होंने आगे चलकर अपने पिता की भांति सप्तर्षियों का पद भी प्राप्त किया। कई जगह इनका नाम अरिष्टनेमि भी कहा गया है।

परमपिता ब्रह्म ने पुष्कर में जो प्रसिद्ध और महान यज्ञ किया था उसमें महर्षि मरीचि 'अच्छावाक्' पद पर नियुक्त हुए थे। यही नहीं, दस हजार श्लोकों से युक्त ब्रह्मपुराण का दान भी ब्रह्मदेव ने सबसे पहले महर्षि मरीचि को ही दिया था। वेद और पुराणों में इनके चरित्र का चर्चा मिलती है। कहा जाता है कि जब महारथी भीष्म बाणों की शैय्या पर थे तो महर्षि मरीचि उनसे मिलने आये थे। यही नहीं उन्होंने ही भक्त श्रेष्ठ ध्रुव को श्रीहरि की तपस्या करने की प्रेरणा दी थी।

इस रूप में पुराणों में मरीचि अतिश्रेष्ठ ऋषि, ज्ञानवान और ब्रह्म संतान के रूप में चित्रित हैं।

क्विज का जवाब

१)अ २)इ ३)अ ४)ई ५)आ ६)इ ७)अ

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनायें)

मूर्ख-पद्धति

नीटि लोनि व्रात निलवक युन्नट्लु
पाटि जगति लेदु परमु लेदु
माट माट केल्ल मारुचु नुंडुनु
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ॥११॥

जल के उपरितल पर अंकित लिखावट जिस प्रकार दूसरे ही क्षण में मिट जाती है, उसी तरह गुणहीन भी वचन देकर घड़ी-घड़ी उसे तोड़ता रहता है। वह यहाँ (इस संसार में) के समाज का लिहाज नहीं करता और वहाँ (परलोक) के भगवान का डर नहीं मानता। ऐसे लोगों का भरोसा नहीं किया जा सकता।

अगस्त २०२२

०१ नागचतुर्थी
०२ गरुडपंचमी
०५ श्री वरलक्ष्मीव्रत
०६ मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा वर्धंति
०७-१० तिरुमल श्री बालाजी का पवित्रोत्सव
११ श्री विखनस महामुनि जयंती, राखी
१२ श्री हयग्रीव जयंती
१३ गायत्रीजपम्
१५ भारत स्वतंत्रता दिवस
१९ श्रीकृष्णाष्टमी, गोकुलाष्टमी
२९ श्री बलराम जयंती
३० श्री वराह जयंती
३१ श्री गणेश चतुर्थी

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - 9449517879

120

श्रीमते रामानुजाय नमः

यज्ञोपवीत वद्धार्थ मुर्ध्वपुण्ड्रं द्विजेन तु।
सूतके मृतके वापि न तु त्याज्यं कदाचन।।
गुरु पादाङ्कितं वस्त्रं गुरुपादजलं तथा।
पूजां मानसिकीञ्चापि न कदापि परित्यजेत।।

यज्ञ, दान, तप, होम, पाठ, पूजन, सन्ध्या, तर्पण वगैरह बिना ऊर्ध्वपुण्ड्र किये सब व्यर्थ हो जाता है। इससे सदा ऊर्ध्वपुंड्र तिलक करना चाहिए। जैसे जनेउ बिना द्विज को पानी पीने का अधिकार नहीं हैं उसी प्रकार प्रपन्नों को ऊर्ध्वपुंड्र तिलक किये बिना कुछ भी करने का अधिकार नहीं है। सूतक में चाहे मृतक में शुद्ध में या अशुद्ध में यज्ञोपवीत के समान प्रपन्नों के ललाट पर सदा ऊर्ध्वपुंड्र तिलक बना रहना चाहिए। किसी भी हालत में गुरु की त्रिविड़ी और श्रीपाद तीर्थ और गुरु भगवान की मानसिक पूजन नहीं त्यागना चाहिए। जैसे द्विजों को सदा जनेउ धारण करके रहना चाहिए उसी प्रकार ऊर्ध्वपुंड्र तिलक भी धारण करके रहना चाहिए।

नित्यमर्चा जप ध्यान स्नान दान ब्रतादिकम्।
विशुद्ध मेव कर्तव्य मनन्यैर्न विमिश्रितम्।।

अनन्य भागवतों को चाहिए कि भगवान की सेवा, भगवत्मन्त्रों का जप, श्री भगवान का व्रत विशुद्धता पूर्वक ही करना चाहिए। इसका यह भाव भया कि देवतान्तरों के साथ जहाँ कहीं भी शास्त्रों में भगवान का पूजन आदि का प्रसंग हो उसे भगवान के अनन्य शरणागतों से भिन्न अधिकारियों के लिए जानना चाहिए। शरणागति धर्म पर परिस्थिति करके रहने वाले बडे-बडे महात्मा लोग श्रीरामनवमी, श्री जन्माष्टमी, श्री वामन द्वादशी, श्री नृसिंह चतुर्दशी और एकादशी इन्हीं पांच व्रतों को किया करते हैं और अपने आचार्य के तथा प्रधान आचार्यों के जन्म तिथि तथा अन्तिम तिथि के रोज कुछ विशेष भगवान का उत्सव करके अपनी शक्ति के अनुसार भागवताराधन किया करते हैं। श्री जी के नक्षत्र के दिन महोत्सव मनाया करते हैं। और भी समय-समय पर भगवान का अनेक उत्सव मनाया करते हैं। इसका

कारण यह है कि श्री भगवान के सिवा दूसरे देवों का भजन, कीर्त्तन, व्रत, तीर्थ, नमस्कार, प्रणाम आदि करने को श्री भगवान के शरणागतों के लिए शरणागति धर्म को प्रतिपादन करनेवाले शास्त्रों के द्वारा मना कर दिया गया है। जैसे पहले मैं बता चुका हूँ कि पुण्य नदियों का स्नान इतर पक्षियों के लिए पुण्य कारक है और चातक के लिए उसकी निष्ठा का भंजक हैं जैसे कि दोहा में कहा हैं-

गंगा यमुना सरस्वती सात सिन्धु भरपूर।
तुलसी चातक के मते बिना स्वाति सब धूर।।

यह चातक पक्षी के अनन्यता के बाबत महात्मा श्री तुलसीदास जी का कहा हुआ दोहा है। इसका यह भाव है कि गंगा, यमुना, सरस्वती आदि पवित्र नदियों में तथा सात समुद्रों में बहुत जल भरा हुआ है परन्तु चातक पक्षी के लिये तो स्वाती नक्षत्र में वर्षता हुआ जल के बून्द के बिना पूर्वोक्त पुण्य नदियों का तथा सात समुद्रों का जल तो दूर के समान है याने निकम्मा है। चातक पक्षी चाहे कितना भी प्यासा रहता है परन्तु स्वाती के बून्द के सिवा गंगा, यमुना आदि के जल को छूता तक नहीं है पीने की तो बात ही क्या है फिर भी महात्मा तुलसीदास जी कहते हैं कि-

दोहा - *बध्यो बधिक पड्यो पुण्यजल उपर उठाई चोंच।*
तुलसी चातक पीत पट मरतेउ लग्योन खोंच।।

बहुत प्यासा हुआ एक चातक पक्षी किसी पुण्य नदी के ऊपर से उड़ता हुआ चला जा रहा था। एक व्याध ने उसको बाण

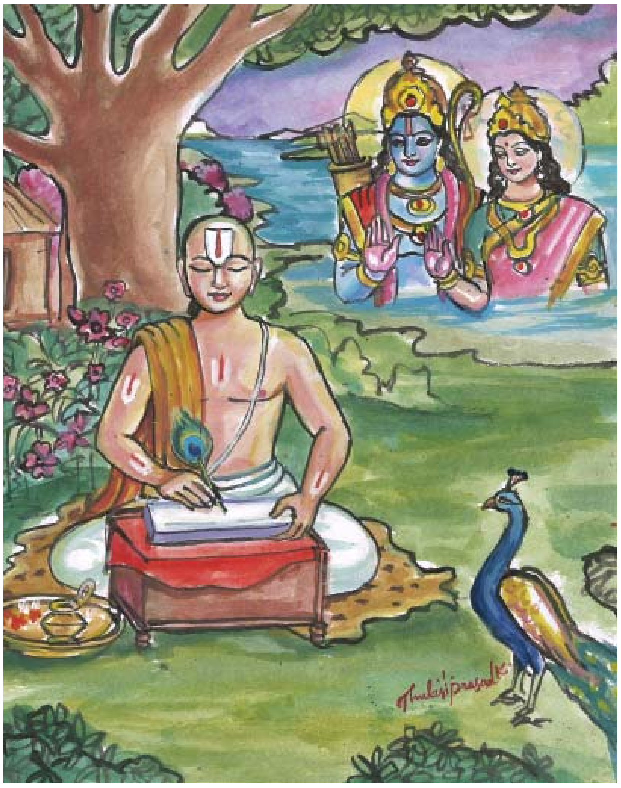

से मारा। वह उसी पवित्र नदी में गिर गया। सद्यपि हृद्द से ज्यादा वह प्यासा भी था और बाण के पीड़ा से उसका प्राण भी जा रहा था तो भी चातक पक्षी ऐसी हालत में उस पुण्य नदी के जल को अपनी निष्ठा का भंजक समझ कर नहीं पिया किन्तु उलटकर चोंच आकाश की तरफ किया। उसका हृदय यह था कि मेघ यदि इस वक्त भी स्वाती की बून्द हमें देवेगा तो मैं उसको पीऊँगा नहीं तो भले ही मर जाऊ परन्तु इस नदी का जल नहीं पीऊँगा इस प्रकार सोचते-सोचते वह मर गया परन्तु गंगाजल का पान नहीं किया।

उपासक लोग मरते समय गंगाजल पान करते हैं और उनकी प्रशंसा हुआ करती है कि अन्त में इनको गंगाजल मिला। और उस चातक पक्षी ने प्यास के मारे तो प्राण छोड़ दिया परन्तु गंगाजल को नहीं पिया। मरते समय यदि किसी को गंगाजल देवे और उसको यदि वह न लेवे तो कोई भी उसकी प्रशंसा नहीं करेगा किन्तु निन्दा ही करेगा कि कैसा यह अभागा है कि मरते समय गंगाजल का अपमान कर रहा है। परंतु श्री

तुलसीदास जी महाराज तो उस चातक पक्षी की निन्दा न करके बार-बार प्रशंसा ही कर रहे हैं और कह रहे हैं कि वाह रे भाई चातक। तुम्हारे निष्ठा पालने की कोटि-कोटि धन्यवाद है कि ऐसे समय में भी प्राण तो दे दिया परन्तु अपनी निष्ठा को नहीं छोड़ा।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि महात्माओं उसी प्रकार भगवान श्रीपति के शराणागत अधिकारी के सिवा इतर लोगों के लिए दूसरे देवों का भजन, पूजन, नमस्कार वगैरह पुण्य कारक है। शरणागत अधिकारियों के लिए पुण्य कारक न होकर उनकी शरणागति निष्ठा का भंजक है।

यदि श्री भगवान के शरणागत भूलकर के भी देवतान्तर में प्रवृत्त होवे तो उसके अनन्यता व्रत का नाश हो जायेगा। जैसे शरणागत के लिए उपायान्तर में जाने पर प्रायश्चित करना बताया है उसी प्रकार भूलकर कभी यदि दूसरे देवों का भजन या दूसरे देवों का नमस्कार या दूसरे देवों का व्रत करले या भोग लगाया हुआ संस्पर्श करले, दूसरे देवों का दर्शन करले तो उसकी शरणागति टूट जाती है। जैसे उपायान्तर में प्रवृत्त होने पर प्रपत्त को ठिकाने आने के लिये प्रपन्न को प्रपत्ति प्रतिपादक शास्त्रों के द्वारा प्रायश्चित करना बताया है।

उसी प्रकार श्री भगवान के अतिरिक्त भ्रम से भी दूसरे देवों के भजन, पूजन, वन्दन करने पर शरणागति प्रतिपादक शास्त्रों के द्वारा शरणागतों के लिए प्रायश्चित करने को आदेश किया गया है। प्रपत्ति प्रतिपादक शास्त्रों का कहना है कि प्रपन्न तो अपने इष्टदेव के सिवा इतर देवों में कभी प्रवृत्ति करते ही नहीं। यदि किसी कारण वश भूल से देवतान्तर में प्रवृत्ति हो जाय तो टूटी हुई शरणागति को ठिकाने आने के लिए फिर उसे प्रायश्चित कर लेना चाहिए। शास्त्र विहित इतर प्रायश्चित तो स्वरूप विरुद्ध होने के कारण शरणागत कर नहीं सकता।

इसलिए संकर्षण, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न नाम से प्रसिद्ध जो भगवान श्रीपति हैं उनको साष्टांग करके प्रार्थना करे कि हे कृपासागर हमारे अपराधों को क्षमा करिये, अब ऐसा कभी न करेंगे। शरणागत मुमुक्षुओं के लिए श्री भगवान के सिवा इतर देवों का भजन, पूजन, शास्त्रों के द्वारा मना कर दिया गया है उसको मैंने भूल से कर लिया। यह मेरे से बड़ा भारी अपराध हुआ।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे महात्माओं! प्रपत्ति प्रतिपादक शास्त्रों में इसको वैयू ही शान्ति बताया है। जैसे कि-

भजने चान्ययदेवाना मपचारे च शॉप्रिणिः।

बैयूही परमां शान्तिं कुर्वीत सत्वसंश्रयः।।

इस श्लोक का वही भाव है जो कि पहले कह चुके हैं। श्री देवराज गुरु कहते हैं कि प्रपत्ति शास्त्र को नहीं जानने वाले तो इस बात को सुनकर आश्चर्य करेंगे परन्तु शरणागति शास्त्रों को जानने वाले तो आश्चर्य नहीं करेंगे।

शास्त्रों की शैली और धर्म का प्रसंग विलक्षण होता है। हरेक धर्म का हरेक अधिकारी नहीं है। जब तक विवाह नहीं किया रहता है तब तक वो ब्रह्मचारी कहाता है। गृहस्तों के अपेक्षा शास्त्रों के द्वारा ब्रह्मचारी का धर्म भी कुछ विलक्षण बताया गया है जैसे सुरमा नहीं लगाना, पुष्पमाला नहीं धारण करना, ताम्बूल नहीं खाना, मलयागिर चन्दन का लेप नहीं करना, कच्छ नहीं बाँधना इत्यादि ब्रह्मचारियों के लिए शास्त्रों में धर्म कहा है।

वही ब्रह्मचारी जब गृहस्थाश्रम को स्वीकार कर लेता है याने जब विवाह कर लेता है तो उसके लिए जो जो बात शास्त्रों के द्वारा मनाई थी वही करने के लिए आज्ञा दी जाती है। ब्रह्मचारी हालत में कच्छ बाँधना पाप था, गृहस्थ हालत में कच्छ बाँधना पुण्य हो गया। बिना कच्छ के रहना पाप हो गया। ब्रह्मचारी दशा में पान खाना, चन्दन लगाना, सुरमा लगाना, पुष्पमाला धारण करना मना था वही जब विवाह करके गृहस्थ हो गया तो उसके लिए विधान हो गया।

क्रमशः

श्री प्रपन्नामृतम्

(34वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - 9900926773

देवी सरस्वतीजी से ''श्रीभाष्यकार'' पद की प्राप्ति

कुरंगनगरी से केरल पधारकर यतिराज ने वहाँ के सभी भगवान विष्णु के मंदिरों एवं दिव्यदेशों में जाकर भगवान का मंगलाशासन व प्रणाम करते हुए तथा वहाँ के परमतावलम्बी पण्डितों को शास्त्रार्थ में पराजित करते हुए जगह-जगह पर भगवान विष्णु के मंदिरों की तथा रामानुज मठ की स्थापना करायी। इस प्रदेश में सर्वत्र परमतावलम्बी विद्वानों को शास्त्रार्थ में जीतकर और स्थान-स्थान पर भगवान विष्णु के मंदिरों में दर्शन कर यहाँ से आपने उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान किया।

उत्तर में द्वारका, मथुरा, अयोध्या, श्रीशालग्राम क्षेत्र (मुक्ति नारायण), बदरिकाश्रम, नैमिषारण्य, पुष्कर और वृन्दावन आदि पवित्र स्थानों एवं अन्यान्य तीर्थ स्थानों की यात्रा करते हुये श्रीस्वामीजी शारदापीठ पधारे। वहाँ भगवती सरस्वती ने आपके शुभागमन को सुनकर स्वमेव आपके सन्मुख उपस्थित होकर प्रसन्नता प्रकट की और आपके मुख से 'कप्यास श्रुति' का तात्पर्य सुनने की इच्छा प्रकट की।

भगवती वीणापाणी शारदा को यतिराज ने इस श्रुति का अर्थ बताते हुए कहा कि- ''कम् (जल को) पिबति (जो पीता है) वह 'कपि' कहा जाता है, सूर्य जल का पान-शोषण करते हैं, इसलिये 'कपि' का अर्थ-सूर्य, उस सूर्य के द्वारा विकसित कमल को 'कप्यास' कहते हैं, और उस कमल के समान अरुण भगवान श्रीमन्नारायण के नेत्र हैं। 'कप्यास श्रुति' का यही सैद्धान्तिक अर्थ है।'' भगवती सरस्वती यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुयीं और यतिराज द्वारा विरचित विस्तृत श्रीभाष्य को अपने मस्तक पर रखकर आदर के साथ भुजाओं को पसारकर, यतिराज के हाथों को अपने हाथों में लेकर कहा- ''आपके द्वारा कथित श्रुति का यह अर्थ तो वास्तविक एवं यथार्थ है।''

यह कहकर भगवती शारदा ने प्रसन्नतापूर्वक आपको भाष्यकार की पदवी से विभूषित किया। और भगवान

श्री हयग्रीव की मूर्ति को निर्माण कराकर प्रदान किया। भगवती सरस्वती के द्वारा किये गये इस अपूर्व सम्मान से यतिराज अत्यन्त सन्तुष्ट होते हुये बोले- ''देवी शारदे! मेरे ऊपर आपने जो यह विशिष्ट अनुकम्पा की है, इसका कारण क्या है, यह जानने की मेरी इच्छा है।'' तब फिर सरस्वती ने कहा कि- 'यहाँ पर श्रीशंकराचार्य स्वामीजी भी पधारे थे, परन्तु उन्होंने भी ''कप्यास'' श्रुति का ऐसा सुन्दर अर्थ नहीं किया था। आपके अर्थ से मुझे बड़ा सन्तोष हुआ है। इसलिये विद्वद्वरेण्य! मैंने यह आपका सम्मान किया है।'

तदनन्तर इस प्रकार के अन्य सभी विशिष्ट विद्वानों ने श्रुति के इस अर्थ को सुनकर यतिराज से शास्त्रार्थ किया लेकिन कोई भी विद्वान् आपके अकाट्य प्रमाणों के समक्ष स्थिर नहीं रह सका। सभी सभा स्थान त्यागकर शीघ्र प्रस्थित हो गये।

इस प्रदेश के राजा ने जब पण्डितों के पराजय का समाचार सुना तो वह यतिराज को भगवान का अवतार मानकर उनका शिष्य बन गया। इस वैभव को वहाँ के ईर्ष्यालु पण्डित लोग सहन नहीं कर सके और उन्होंने यतिराज के ऊपर अभिचार कर्म (तान्त्रिक प्रयोग मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि) करने प्रारम्भ किये। लेकिन उक्त अभिचारादि कर्म शेषावतार यतिराज का कुछ भी नहीं बिगाड़ सके। इसके विपरीत जिन लोगों ने यह प्रयोग किये थे और करने में सहयोग दिया था, वे सभी पण्डित विक्षिप्त (पागल) होकर अनर्गल प्रलाप करते हुये मार्ग में भ्रमण करने लगे।

राजा ने जब अपने राज्य के पण्डितों की दुरावस्था देखी तो उन्होंने यतिराज से प्रार्थना की कि- ''महाराज! इनका इस प्रकार रहना अच्छा नहीं है। आप इनको स्वस्थ बनाकर पूर्व की स्थिति प्रदान कीजिये।'' राजा की प्रार्थना पर अपरिमितोदार गुणसागर यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने अपने कृपाकटाक्ष से उन सभी पण्डितों को स्वस्थ बना दिया। इसके बाद वे राजा की आज्ञा से अपने अहंकार, ईर्ष्या, पाखण्ड आदि दुर्गुणों का त्याग करके यतिराज के शिष्य बन गये। काश्मीर में भगवती सरस्वती से 'भाष्यकार' पदवी प्राप्त करके एवं वहाँ के राज-पण्डितों को पराजित कर अपना शिष्य बना करके और राजा द्वारा सम्मानित होकर यतिराज ने यहाँ से प्रस्थान किया। आपके साथ अपनी सेना के सहित दो योजन तक चलकर आपके शिष्य यहाँ के महाराज ने आपको सम्मानित किया और यहाँ से आप गंगा नदी के तट पर आकर ठहर गये।

।।श्रीप्रपन्नामृत का ३४वाँ अध्याय समाप्त हुआ।।

क्रमशः

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में 108 बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

घंटावतार वेदांतदेशिक की रचना सुदर्शनाष्टक

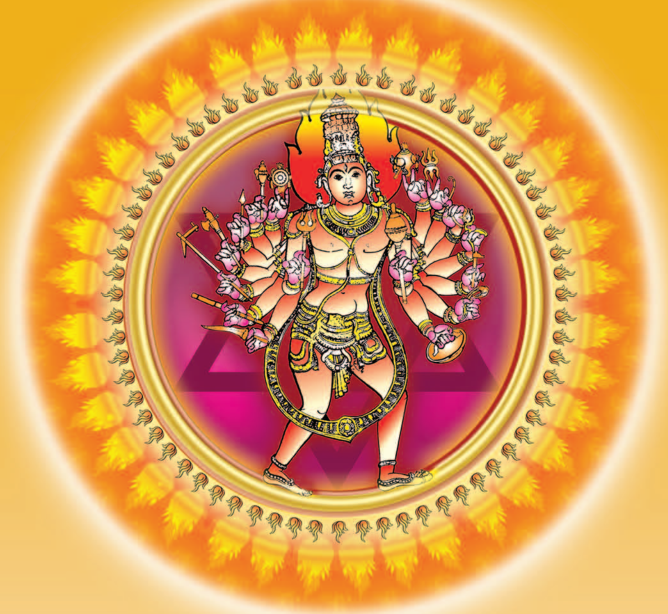

प्रतिभटश्रेणीभीषण - वरगुणस्तोमभूषण
जनिभयस्थानतारण - जगदवस्थानकारण,
निखिलदुष्कर्मकर्शन - निगमसद्धर्मदर्शन
जयजयश्रीसुदर्शन - जयजयश्रीसुदर्शन। (1)

हे सुदर्शन चक्र! तुम वैरी वर्ग के लिए भयंकर हो। श्रेष्ठ गुण ही तुम्हारे आभूषण हैं। तुम जन्म, जरा, मृत्यु से युक्त संसार भय को दूर करने वाले हो। लोक स्थिति के लिए कारण भूत हो, समस्त पापों का निर्मूलन करने वाला हो। वेद, धर्मों का दर्शन कराने वाला तुम्ही हो। ऐसा तुम सर्वोत्कृष्ट रूप से विराजमान हो!

शुभजगद्रूपमंडन - सुरजनत्रासखंडन
शतमखब्रह्मवंदित - शतपथब्रह्मनंदित,
प्रथितविद्वत्सपक्षित - भजदहिर्बुय्न्धलक्षित
जयजयश्रीसुदर्शन - जयजयश्रीसुदर्शन। (2)

विश्वमंगल विग्रह श्रीमन्नारायण का अलंकार, देवताओं के भय को दूर करने वाला, इंद्र और ब्रह्म से प्रणाम स्वीकार करने वाला, अथर्व-वेदीय-शतपथ ब्राह्मण से स्तुति कराने वाला, अहिर्बुय्ध्न संहिता में प्रतिपाद्य वैभव वाला हे सुदर्शन! तुम्हारी जय हो!

निजपदप्रीतसद्गुण -
निरूपथि स्फीतषड्गुण
निगमनिर्व्यूढ़वैभव -
निजपरव्यूहवैभव,
हरिहयद्वेषीदारण -
हरपुरप्लोषकारण
जयजयश्रीसुदर्शन -
जयजयश्रीसुदर्शन। (3)

तुम्हारे चरणारविंदों को देखकर खुश होनेवाले साधु समूह प्राप्तवान! स्वाभाविक, परिपूर्ण 'ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, वीर्य, शक्ति, तेज' नामक षड्गुण वान! वेदों में कीर्तित महिमावान! आत्मीय 'पर, व्यूह, विभव, अंतर्यामी, अर्च' नामक पाँच रूपों वाला! इंद्र के शत्रु दानवों का दमन करनेवाला! काशी नगर को भस्म होने का कारणभूत हे सुदर्शन! तुम्हारी जय हो!

स्फुटतटीज्ज्वालपिंजर - पृथुतरज्वाल पंजर
परिगतप्रत्नविग्रह - पटुतर प्रज्ञदुर्ग्रह,
प्रहरण ग्राममंडित - परिजनत्राणपंडित
जयजयश्रीसुदर्शन - जयजयश्रीसुदर्शन। (4)

बिजली के चमक जैसे सुनहरी वर्ण में चमकनेवाला! बहुत बडे शोलों के बीच में रहने वाला! सनातन रूप वाला! मजबूत मत वाले भी जानने के लिए अलभ्य वाला! आयुध समूह से अलंकृत वाला! आश्रित जनरक्षण में सामर्थ्य वाला! श्री सुदर्शन! तुम्हें जय हो!

भुवननेत्रत्रईमय - सवनतेजास्त्रईमया
निरवधिस्वादुचिन्मय - निखिलशक्ते जगन्मय,
अमितविश्वक्रियामया - शमितविश्वग्भयामय
जयजयश्रीसुदर्शन - जयजयश्रीसुदर्शन। (5)

त्रिभुवनों के नेत्र समान! ऋग, साम, यजुर्वेद स्वरूप वाला। यज्ञों में आराधनीय गार्हपत्य, आवाहनीय दक्षिणाग्न नामक तीन अग्नियों के रूपवाला! अनंत भाग्य ज्ञान स्वरूप, सर्वविध सामर्थ्य वाला! जगद्रूप वाला! संसार भय नामक रोग हरण करने वाला! हे सुदर्शन! तुम्हारी जय हो!

महितसंपत्सदक्षर - विहितसंपत्षडक्षर
षडरचक्र प्रतिष्ठित - सकलतत्त्वप्रतिष्ठित,
विविधसंकल्पकल्पक - विबुधसंकल्पकल्पक
जयजयश्रीसुदर्शन - जयजयश्रीसुदर्शन। (6)

प्रशस्त ज्ञान संपत्ति प्राप्त आश्रितों को मोक्ष रूप वाला! ऐश्वर्य प्राप्त कराने वाला! अक्षर युक्त सहस्त्रारहुम् फट मंत्र से उपासित होने वाला! षडचक्र में रहनेवाला! समस्त भाव में अंतर्यामी रूप में होने वाला! विभिन्न चाहों को कल्पवृक्ष समान वाला! कल्पवृक्ष की तरह आश्रितों की कामनाएँ पूर्ण करनेवाला! हे सुदर्शन! तुम्हारी जय हो!

प्रतिमुखालीढ़बंधुर - पृथुमहाहेतीदंतुर
विकटमायाबहिष्कृत - विविधमालापरिष्कृत,
स्थिरमहायंत्रतंत्रित - दृढ़दयातंत्रयंत्रिता
जयजयश्रीसुदर्शन - जयजयश्रीसुदर्शन। (7)

दाहिने पैर को आगे बढ़ाकर, बाए पैर को पीछे रखने से प्रत्यालीढ नामक बंधन होता है। उस प्रत्यालीढ बंधन से मनोहर वाला! महान हथियारों से व्याप्त वाला! विकट माया के अतीत रहने वाला! विभिन्न मालाओं से अलंकृत वाला! अविचल महान यंत्र को प्रतिष्ठित करनेवाला! दृढ़ तंत्र से वशीभूत वाला! हे सुदर्शन! तुम्हारी जय हो!

दनुजविस्तारकर्तन - दनुजविद्याविकर्तन
जनितमिश्राविकर्तन - भजदविद्यानिकर्तन,
अमरदृष्टस्वविक्रम - समरजुष्टभ्रमिक्रम
जयजयश्रीसुदर्शन - जयजयश्रीसुदर्शन। (8)

दनुजों के महत्व को कम करने वाला! असुरों की माया को संपूर्ण रूप से अंत करने वाला! संसार नामक अंधेरी रात को सूरज समान वाला! भक्तों के अज्ञान को पूरी तरह से मिटाने वाला! देवताओं से दर्शित स्वकीय पराक्रम वाला! रण-रंग में चित्र-विचित्र भ्रमण करने वाला! हे सुदर्शन! तुम्हारी जय हो!

द्विचतुष्कमिदंप्रभूतसारम्
पठतां वेंकटनायक प्राणीतम,
विषमेऽपिमनोरथः प्रधाव
न्न विहन्येत रथांगधुर्यगुप्तः।

इति श्री वेदांताचार्यस्य कृतिषु सुदर्शनाष्टक।

श्री वेदांतदेशिक से अनुग्रहित, महान सारवाला यह सुदर्शनाष्टक का पठन करने वाले भक्तों का मन कभी-कभी अप्राप्य विषयों में डूबने पर भी श्री सुदर्शन भगवान से रक्षित होकर दीप्तमान होता है। श्री सुदर्शन भगवान के अनुग्रह से सुदर्शनाष्टक का पठन करने से अभीष्टसिद्धि को प्राप्त करते हैं।

4. स्वामी प्रयोजनकारी उपदेश :-

सेवा धर्म में स्वामी की सेवा के साथ-साथ असीम स्वामी प्रयोजन करने का गुण भी आदर्श के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है। सेवक सतत अपने स्वामी के प्रयोजन के लिए ही कार्यरत रहता है। जिस कार्य से अपने स्वामी की सेवा संपन्न होती है और जिस कार्य से अपने स्वामी को प्रयोजन संभव है उस कार्य को करना उत्तम सेवकों का धर्म है। बल्कि उत्तम सेवकों का यह भी धर्म है कि तब स्वामी किसी कुमार्ग पर चल रहे हैं, या जिस मार्ग पर चलने से स्वामी को प्रयोजन प्राप्त होने की जगह नुकसान होने की संभावना है। उस मार्ग से स्वामी को हटाने या हटने के लिए उपदेश देना भी उत्तम सेवकों का धर्म है। ऐसे उत्तम कार्य उपदेश देने का गुण हनुमान चरित्र में देखा जा सकता है। हनुमान का यह उपदेशात्मक गुण सभी सेवकों के लिए आदर्श है। हनुमान अपने स्वामी सुग्रीव, तारा, अंगद, रावण आदि को उपदेश देकर उन में परिवर्तन लाने की सफल कोशिश करते हैं। ऋष्यमूक पर्वत में धनुष बाण धारी राम-लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव भय कंपित होता है कि वे वाली के द्वारा भेजे गए शत्रु हैं। तब हनुमान सुग्रीव को उपदेश देकर उस के भय का निवारण करते हैं--

संभ्रम स्त्यज्यता मेष सर्वैर्वालिकृते महान्।

मलयो यम गिरिवरो भयम ने हस्ति वालिनः।।

वेंकटाचल अंजनाद्री और अंजनासुत हनुमान

- आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 9849670868

सुग्रीव से हनुमान ने स्पष्ट किया कि यह ऋष्यमूक नामक पर्वत है। यहाँ वाली का कोई भय नहीं हो सकता है। आप निश्चिंत यहाँ रह सकते हैं। इस रूप में सुग्रीव का सेवक हनुमान अपने स्वामी को भय से दूर करने की कोशिश करते हैं। वाली वधनानंतर सुग्रीव राजा बनकर सुग्रीव वानर स्त्रीयों के साथ काम भोग करने लगे। सीता की खोज के बारे में सोचना भी छोड दिया। तब हनुमान ने मधुर वचनों से अपने स्वामी को कर्तव्य से बोध कराया। यह अपने स्वामी प्रयोजनों के प्रति प्रतिबद्ध सेवकों का उच्चादर्श का परिचय देता है। हनुमान के उपदेश से ही सचेत होकर सुग्रीव सीतान्वेषण का आरंभ करता है। इस रूप में हनुमान अपने स्वामी सुग्रीव के प्रयोजनों की रक्षा करता है।

जांबवान, अंगदादि वानरों के साथ दक्षिण दिशा में हनुमान भी सीतान्वेषण के लिए चल पडे। सुग्रीव के द्वारा दिया गया एक महीने का समय बीत गया। सीता का पता नहीं चला। जांबवान, अंगदादि को भय सताने लगा कि सीता के पता नहीं लगाने से वानर राज सुग्रीव उन्हें जिंदा नहीं छोडेंगे। सुग्रीव के हाथों में मरने की जगह पहले ही प्राण त्याग करना बेहतर है समझकर अंगदादि प्राण त्याग करने तैयार हो गए। तब स्वामी के सच्चा सेवक बन कर उन्हें उपदेश देते हैं--

नित्यम अस्थिर चित्ता हि कपयो हरिपुंगव।
नाज्ञाप्यम विष हिष्यंति पुत्रदारान विना त्वया।।

हनुमान अंगद से स्पष्ट करते हैं कि इस रूप में हम से अलग होकर प्राण त्याग करने से कोई प्रयोजन नहीं है। पुत्र वत्सल सुग्रीव असलियत जान कर अपने बाद तुम्हें राजा बना सकते हैं। इस रूप में प्राण त्याग करना व्यर्थ है। हनुमान का उपदेशात्मक गुण उन संदर्भों में प्रकट होता है। जब तारा अपने पति वाली के वध के बाद पति के साथ सती बनना चाहती है। तब भी हनुमान भविष्य के बारे में आशावान बनाकर तारा की रक्षा करते हैं। तद्वारा भी अपने स्वामी सुग्रीव की सेवा करते हैं। अशोक वन में सीता का पता लगाकर आत्म त्याग के लिए तैयार बैठी सीता के मन में भी धैर्य को भरते हैं। सीता के पास यथा समय पहुँच कर इस रूप में सीता की रक्षा के साथ-साथ रघुवंश की रक्षा ही कर डालते हैं। अन्यथा सीता की अनुपस्थिति में राम, राम की अनुपस्थिति में लक्ष्मण और समस्त रघुवंश मिट जाता। इस रूप में हनुमान सीता की रक्षा के साथ-साथ अपने स्वामी की रक्षा भी करते हैं।

हनुमान के उपदेशात्मक गुण का पता उस समय चलता है। तब वे साक्षात राक्षस नरेश रावण को उस के दरबार में उपदेश देते हैं। परायी स्त्री का अपहरण करना महा पाप कहकर पुरुषोत्तम राम से क्षमा मांगने का उपदेश देते हैं--

कश्च लक्ष्मण युक्तानाम रामकोपानुवर्तिनाम।
शरणा मग्रतः स्थातुः शक्तो देवासुरेश्चपि।।

राम-लक्ष्मण के कोप से बचने का एक ही रास्ता है। राम की शरण में जाना। देवताओं एवं राक्षसों में किसी के पास भी राम के बाणों से निरोध करने की शक्ति नहीं है। इस रूप में राक्षस राज रावण को उपदेश देनेवाले धीशाली हनुमान ही हैं। सेवक धर्म को निभाने में इस रूप में अपनी शक्ति, युक्ति और उपदेश गुणों का उपयोग करके हनुमान सेवा-धर्म के असीम आदर्शों की स्थापना की है।

सेवा धर्म का सर्वोत्कृष्ट रूप - निस्वार्थ सेवा भाव :-

सेवा करो मेवा खाओ। मेवा खाओ सेवा करो। इस से बढकर मेवा खाओ किंतु सेवा मत करो। ये आज के

जीवन के नारे बने हुए हैं। किंतु रामायण-काल का आदर्श इससे भिन्न है। दूसरों की सेवा करनेवाले के बदले में उन से किसी भी प्रकार के प्रयोजन की प्रत्याशा नहीं करते हैं। हनुमान का सेवा भाव भी इसी उच्च कोटी का है। सुग्रीव और राम की सेवा हनुमान निस्वार्थ भाव से ही करते हैं। सेवा करते समय जो आनंद प्राप्त होता है, हनुमान उसी को महाप्रसाद मानते हैं। राम को रोम रोम में समानेवाले हनुमान राम की सेवा में ही परमानंद को प्राप्त करते हैं। राम सेवा, राम कार्य, रामाज्ञा ही हनुमान के परमानंद के मूल मंत्र है। राम और सग्रीव को मिलाने से लेकर अयोध्या में राम के पट्टाभिषेक तक अनेक प्रकार की सेवा हनुमान ने राम की की है। सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अंगद, तारा आदि अनेक रामायण पात्रों ने भी हनुमान से अनुपम सेवाएँ प्राप्त की है। बदले में हनुमान ने उन से कुछ नहीं पाया। स्वामी भक्त कहलाना ही उन के लिए परमानंद का विषय है। स्वामी भक्ति में जो आनंद है, शायद हनुमान अन्यत्र प्राप्त नहीं कर पाते हैं। रामायण का वह संदर्भ अत्यंत श्रेष्ठ संदर्भ है। जब उस के स्वामी राम की समझ में कुछ नहीं आता है कि हनुमान की सेवा के बदले में उसे क्या वरदान दिया जाय। क्योंकि हनुमान की सेवा के बिना राम कथा बीच में ही समाप्त हो जाने की संभावना पैदा होती है। वह संदर्भ है सीता का अन्वेषण। सीता का पता लगाने में अगर हनुमान असमर्थ होते तो राम समेत समस्त रघुकुल का नाश होता है। सीता का पता लगाकर लंका से लौटनेवाले हनुमान को क्या वरदान दें। उन की इस सेवा के बदले में क्या दे कर उसे संतुष्ट कर सकते हैं। करोडों वानरों में सिर्फ हनुमान ही शतयोजन सागर को लांघ करके सीता का पता लगाकर सीता से चूडामणी प्राप्त करके ले आये हैं। इस अमूल्य और अनुपम कार्य के बदले में राम के पास देने के लिए क्या है? बस सिर्फ तन स्पर्श को छोडकर और कुछ नहीं। सिर्फ आत्मीय लोगों को ही यह भाग्य प्राप्त होता है। राम ने हनुमान को आलिंगन करके अपने परम सेवक हनुमान को शरीर स्पर्श का अनुग्रह किया। वाल्मीकि आदि कवियों ने इस का मर्मांतक वर्णन किया है। राम इस संदर्भ में इस रूप में सोचते हैं। इस सत्पुरुष ने मेरे प्राणों की रक्षा करनेवाले समाचार देकर सिर्फ मुझे ही नहीं हमारे समस्त रघुकुल का उद्धार किया। इस महत्व पूर्ण समाचार देनेवाले हनुमान को मैं पुरस्कृत नहीं कर पा रहा हूँ--

एषा सर्वस्वाभूतस्तु परिष्वंगो हनूमतः,
मया काल मिमं प्राप्य दत्तस्तस्य महात्मनः।।

इतने महान हनुमान को मैं सिर्फ अपने सर्वस्व आलिंगन मात्र दे पा रहा हूँ। स्वामी और सेवक के बीच का यह अप्रतिम एवं अनुपम अनुभव है। शायद ही कोई स्वामी और सेवक के बीच में ऐसा अनुभव संभव हुआ हो। इस संदर्भ राम और हनुमान दोनों में पुलकावली होती है। दोनों परमानंद प्राप्त करते हैं। स्वामी और

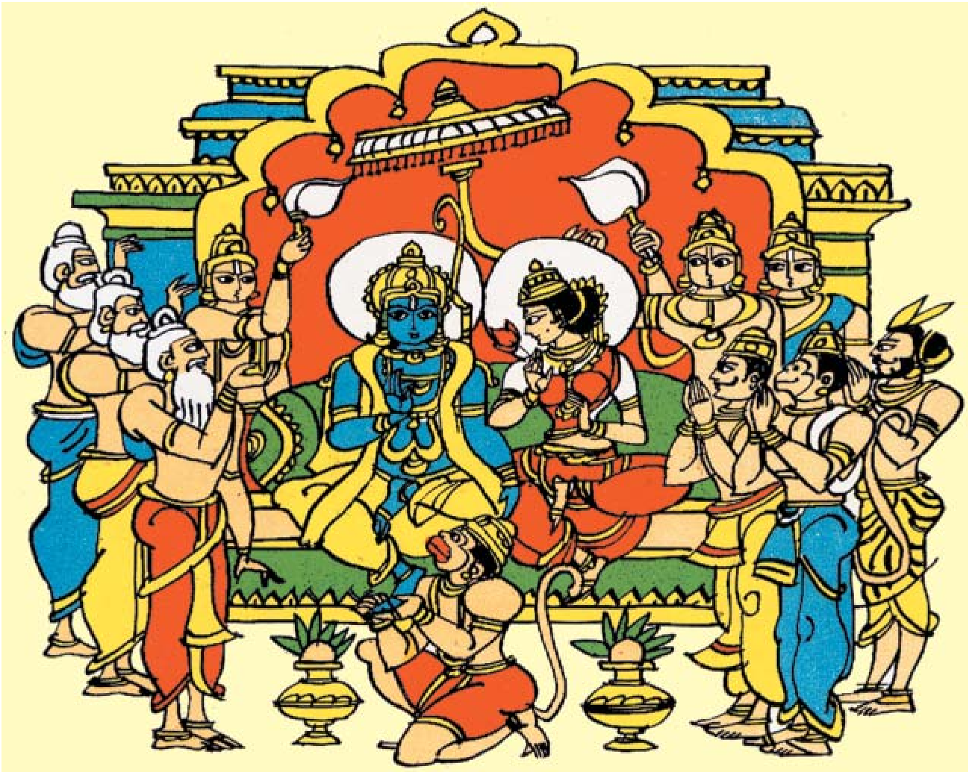

सेवक का यह अद्भुत दृश्य देखकर वहाँ इकट्ठे हुए सभी भी आनंदित हुए। यह हनुमान की निस्वार्थ सेवा का फल और परिणाम है। सेवक के निस्वार्थ सेवा प्राप्त यह आनंद सभी सेवकों के लिए उच्चादर्श है। रामायण का यह प्रसंग भी अत्यंत प्रचलित है।

रामायण का केंद्रीय पात्र हनुमान है। हनुमान राम का सेवक हैं। हनुमान दास्य भक्ति का महोत्तर प्रतीक भी हैं। हनुमान चिरंजीव हैं। उन की यह दास्य भक्ति भी चिरंजीव है। हनुमान सिर्फ एक श्रेष्ठ वानर वीर ही नहीं, अत्युत्तम मंत्री ही नहीं बल्कि इन सब से बढकर एक श्रेष्ठतम कार्यसाधक पूर्ण समर्पित सेवक भी हैं। राम जैसे स्वामी पाकर हनुमान का जन्म धन्य हुआ है तो हनुमान जैसे सेवक पाकर राम का अवतार चरितार्थ हुआ है। हनुमान ने मानव कोटी के सामने अत्युत्तम सेवाधर्म का आदर्श रखा है। प्रत्येक मानव को अपने कर्तव्य और धर्म का पाठ हनुमान के दिव्य चरित्र से प्राप्त होता है। हनुमान के चरित्र के द्वारा सेवा धर्म संबंधी यह अनुपम संदेश प्राप्त होता है कि मानव समाज सेवा धर्म पर आधारित है।

इस महान सेवा-पुरुष का जन्म स्थल श्री वेंकटाचल में स्थित अंजनाद्री है। कलियुग के देव श्री वेंकटेश्वर के श्रीचरणों में इस महापुरुष का जन्म हुआ है जान कर समस्त आंध्रप्रदेश चरितार्थ हुआ है। यह संदेश उस मिट्टी के कण-कण से प्रभावित स्वामी के भक्तों को सेवा धर्म निभाने की महती प्रेरणा देता है। मानव समाज में जीनेवाला प्रत्येक अपने सेवा धर्म के निभाने से मानव समाज अत्यंत सुखी एवं समृद्धि के साथ स्वर्ग सुख पा सकता है। श्रीनिवास के सेवकों को साक्षात इसी प्रेरणा से श्रीनिवास के दर्शन के लिए आनेवाले भक्तों की सतत सेवा करनी चाहिए। हनुमान का चरित्र एक ओर इस दिव्य एवं अलौकिक दास्य भक्ति का संदेश देता ही है। साथ ही सेवा धर्म का यह लौकिक उपदेश प्रस्तुत भी करता है। सेवा धर्म में कार्यरत प्रत्येक मानव हनुमान के गुणों से किंचित भी प्रभावित होगा तो हनुमान के उपदेश सार्थक माने जाएँगे। तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने श्रीनिवास के सेवकों को यह अवसर प्रदान करके उन्हें सच्चे भारतीय ही नहीं बल्कि सच्चे मानव बनने का वरदान दिया है।

समाप्त

गतांक से

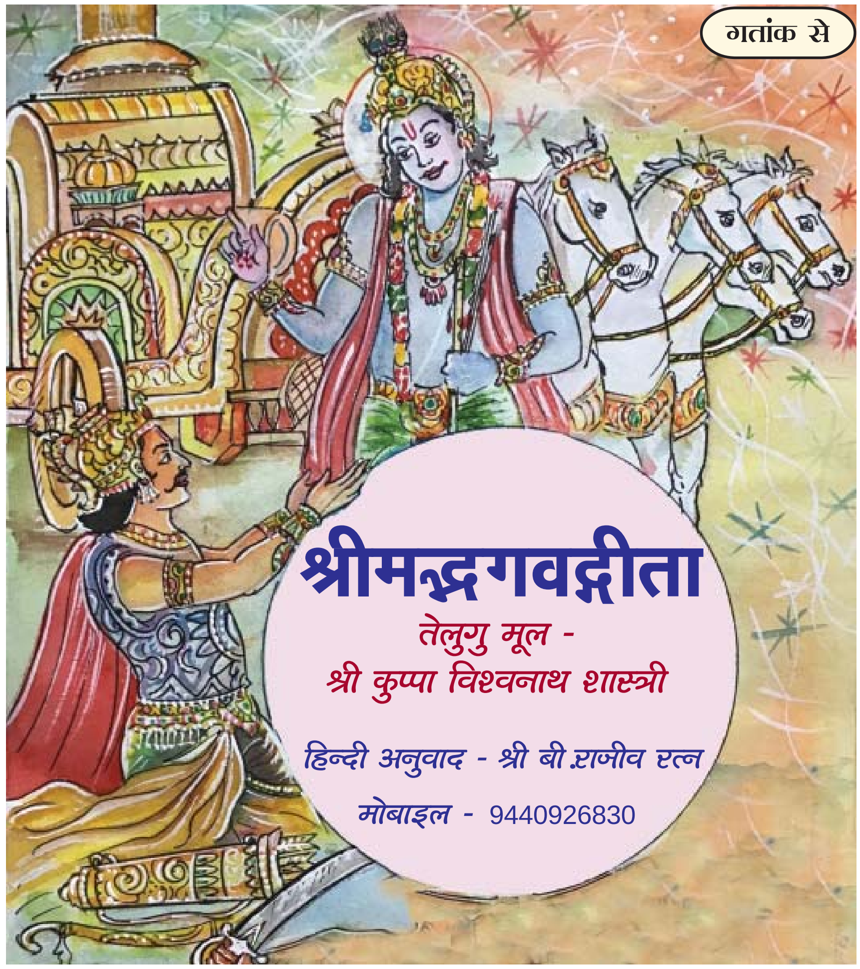

श्रीमद्भगवद्गीता

तेलुगु मूल - श्री कुप्पा विश्वनाथ शास्त्री

हिन्दी अनुवाद - श्री बी.राजीव रत्न

मोबाइल - 9440926830

''मंत्राणाम्'' अर्थात् ''मननातत्रायते इत मंत्र'', हम सोच कर इस विषय को मन में स्थिर कर ले तो वह विषय हमारी रक्षा करेगा। ऐसे को ही मंत्र की संज्ञा दी गई है। वे मंत्र बताई गई बातों को बार-बार दोहराते रहते हैं। क्योंकि वह विषय मन में स्थिर हो जाए आत्मा का स्वरूप मन में स्थिर होना चाहिए ऐसे स्थिर रहने के लिए मंत्र उच्चारण कर पुनः उच्चरित न करें ऐसे नियम न रखें। ऐसे श्री शंकराचार्य जैसे महानुभावों ने उस विषय को स्थिरता दी है।

इसीलिए मंत्र को पुनरुक्ति नहीं कहा जा सकता। कष्ट दाई विषयों में पुनरुक्ति भी एक गुण है। पुनरुक्ति सही है ऐसे चार बार कह चुके हैं। पुनरुक्ति दोष नहीं सही है। इसी विषय को स्थिर करना यह भी दोष नहीं है। यह मंत्रों की रीति नहीं, परमात्मा का विधान यह नहीं। पुनरुक्ति यहाँ सही गुण है। परमात्मा की रीति नहीं। परमात्मा हर बार पुनरुक्ति करते हर स्थान पर कोई छोटी सी विशेषता को, छोटा सा संदेश दूर करने के लिए छोटी-सी विशेषता अवश्य रखते हैं। अब तक हमने जाना आत्मा अविनाशी है। नहीं है कैसे निरूपित करेंगे अर्थात् मैं किसी क्रिया का करता नहीं हूँ। इसे निरूपित करने से मैं संहरित हो सकता है।

दूसरी क्रिया हो सकता है। उस क्रिया का मैं कर्ता नहीं बनता। मुझे उस क्रिया से कोई संबंध नहीं। क्रियाएँ सारी देहों को ही होती है। मैं क्रिया से संबंध न रखने वाला शुद्ध आत्मा हूँ। ऐसा प्रतीत होने पर मेरा कहना तुम्हें बोध हुआ है। यदि ऐसा प्रतीत न होता हो तो तुम्हें इस पर और प्रयत्न करना होगा।

उस विषय को सूचित करने के लिए ''कधंसपुरुषः पार्ध कम घातयति हतिकं'' ऐसा एक प्रश्न पूछ रहा हूँ। मेरे द्वारा बताया गया विषय मन में स्थिर हो ऐसा मैं प्रयत्न करवाऊँगा नर। आप भी अवश्य कर लें इस तरह सूचित करते -

''वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्।।''

ऐसे कह रहे हैं हर संदर्भ में छोटी विशेषता को जोड़ते हैं। उसी समय हमें बताया गया कि विषय कठिन हो तो उस विषय को अपने मन में स्थिर होने तक परमात्मा कहते ही रहते हैं। उस विषय को पुनः ऐसे पुनरुक्ति द्वारा बोलते, पुनरुक्ति युक्त ऐसे गुण हो ऐसा श्लोक एक पाठ की तरह ग्रहण करते उपरोक्त श्लोक में भी लग-भग इसी भावों को देह, अनित्य ऐसे भाव मिलाकर परमात्मा उपदेश दे रहे हैं।

क्रमशः

उच्च और अंतिम लक्ष्य को पाने के लिए नव युवकों का मार्गदर्शन

- *श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालीया, मोबाइल* - 9825113636.

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

क्षुरस्या धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

(कठोपनिषद्, अध्याय 1, वल्ली 3, मंत्र 14)

(उत्तिष्ठत, जाग्रत, वरान प्राप्य निबोधत। क्षुरस्य निशिता धारा (यथा) दुरत्यया (तथा एव आत्मज्ञानस्य) तत् पथः दुर्गं (इति) कवयः वदन्ति।

जिसका अर्थ है : उठो-जागो और जानकार श्रेष्ठ पुरुषों के सान्निध्य में ज्ञान प्राप्त करो। विद्वान मनीषी जनों का कहना है कि ज्ञान प्राप्ति का मार्ग उसी प्रकार दुर्गम है जिस प्रकार छुरे की पैनी की गयी धार पर चलना।

परन्तु हम विचार करे कि पहले हम उठेंगे या जागेंगे तो सिद्ध होता है, कि ये श्लोक लौकिक जगत के लिए नहीं है, क्योंकि लौकिक जगत के अनुसार पहले जगाना होता है न कि उठना। और जानकार श्रेष्ठ पुरुषों के सान्निध्य में ज्ञान प्राप्त करो, इसका भी कोई अर्थ नहीं निकलता है। क्योंकि भौतिक जगत के किसी काम के लिए श्रेष्ठ पुरुषों के सान्निध्य में जाने की कोई आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु हर किसी ने इस श्लोक का अर्थ अपनी दृष्टि से समझा है। कोई तो अपने व्यापार, कोई तो नौकरी, कोई तो खेती, कोई तो राजनीति आदि को अपना लक्ष्य समझ रहा है। परन्तु सम्पूर्ण मानव जाति का एक ही लक्ष्य है और वह है आत्म कल्याण।

यथार्थ अर्थ -

उठो - यहाँ पर उठाने का अर्थ है की अपने आत्म कल्याण के लिए कमर कसकर दृढता से हर परिस्थिति का सामना करे। क्योंकि भक्ति का मार्ग बहुत कठिन है।

जागो - और यहाँ पर जागने का अर्थ है कि हम अज्ञानता की निद्रा में सोये हुए है अतः हम इस अज्ञानता से जागे क्योंकि अज्ञानता से जागे बिना आप को ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता है। अर्थात् भौतिक जगत में जो हम खोये हुए है। इससे जागना ही जागना ही।

और जानकर श्रेष्ठ पुरुषों के सान्निध्य में ज्ञान प्राप्त करो। विद्वान मनीषी जनों का कहना है कि ज्ञान प्राप्ति का मार्ग उसी प्रकार दुर्गम है जिस प्रकार छुरे के पैना किये गये धार पर चलना।

अतः हमारी समझ से तो ये श्लोक परमार्थ के लिए है न कि भौतिक जगत के लिए अर्थात् सिर्फ और सिर्फ आत्म पथ पर चलने के लिए है और वह भी बिना रुके। क्योंकि प्रत्येक मानव का धर्म है अपनी आत्मा का कल्याण करना।

'उत्तिष्ठत जाग्रत...' - कठोपनिषद् का उपदेशात्मक वचन है। जो स्वामी विवेकानंद जी इस सिद्धांत पर चलने के लिए कहते हैं।

स्वामी विवेकानंद के उपदेशात्मक वचनों में यही सूत्र वाक्य विख्यात है। वे कहते थे-

''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।''

इस वचन के माध्यम से उन्होंने देशवासियों को अज्ञानजन्य अंधकार से बाहर निकलकर ज्ञानार्जन की प्रेरणा दी थी। कदाचित् अंधकार से उनका तात्पर्य अंधविश्वासों, विकृत रूढियों, अशिक्षा एवं अकर्मण्यता की अवस्था से था। वे चाहते थे कि अपने देशवासी समाज के समक्ष उपस्थित विभिन्न समस्याओं के प्रति सचेत हों और उनके निराकरण का मार्ग खोजें। स्वामीजी इस कथन

के महत्त्व को कदाचित् ऐहिक जीवन के संदर्भ में देखते थे।

यह सूत्र वाक्य स्वामीजी के अपने मौलिक वचन थे, ऐसा मुझे नहीं लगा। वैदिक चिंतन तथा अध्यात्म में उनकी श्रद्धा थी। मुझे उस स्रोत को जानने की इच्छा हुई जहाँ से उन्हें उक्त वचन मिला होगा। संयोग से मुझे कठोपनिषद् में वह मंत्र दिखाई दिया। जिसका आरंभिक अंश 'उत्तिष्ठत जाग्रत...' है। वह मंत्र है :

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

जिसका अर्थ कुछ ऐसा है : उठो, जागो और जानकार श्रेष्ठ पुरुषों के सान्निध्य में ज्ञान प्राप्त करो। विद्वान मनीषी जनों का कहना है कि ज्ञान प्राप्ति का मार्ग उसी प्रकार दुर्गम है जिस प्रकार छुरे की पैनी की गयी धार पर चलना।

कठोपनिषद् में गौतम ऋषि के पुत्र - नचिकेता का मृत्युदेवता यम के साथ संवाद का विवरण है। नचिकेता को यम सृष्टि के अंतिम सत्य परमात्म तत्त्व के बारे में बताते हैं। उक्त मंत्र में यम द्वारा ऋषि कुमार को परमात्मा के अंशभूत आत्मा का ज्ञान पाने का उपदेश निहित है। स्पष्ट है कि प्रकरण आध्यात्मिक ज्ञानार्जन से संबंधित है न कि भौतिक स्तर के ऐहिक अर्थात् लौकिक विद्यार्जन से। किंतु स्वामी विवेकानंद ने मंत्र के आरंभिक अंश को लौकिक अर्थ में प्रयोग किया है। वस्तुतः उपनिषदों में लौकिक उपयोग की सामान्य विद्या को महत्व न दिया गया हो ऐसा नहीं है।

वैदिक चिंतकों की दृष्टि में मनुष्य देह भौतिक तत्त्वों से बना है, परंतु उसमें निहित चेतना शक्ति का स्रोत आत्मा है। आधुनिक वैज्ञानिक चिंतन आत्मा के अस्तित्व के बारे में सुनिश्चित धारण नहीं बना सका है। कदाचित कई विज्ञानी कहेंगे कि आत्मा-परमात्मा जैसी कोई चीज़ होती ही नहीं है। तत्संबंधित सत्य वास्तव में क्या है यह रहस्यमय है, अज्ञात है।

इस सुभाषित पूर्ती हेतु विवेकानंद के सिद्धांत का अनुसंधान करें।

उत्तिष्ठत जाग्रत... ज्ञान रूपी अस्त्र के हिमायती थे स्वामी विवेकानंद।

स्वामी विवेकानंद का जन्म जिस समय में हुआ था। वह भारत में अज्ञान का नहीं, तो संभवतः जनचेतना का सुषुप्त काल था। लोग पारंपरिक रूढियों में बँधे थे और समुदायों के आवरण से बाहर आकर समग्र हिन्दू राष्ट्र के रूप में संगठित नहीं थे। शेष विश्व में भारत की छवि एकीकृत राजनैतिक इकाई के रूप में तो छोड़ दीजिए। एक भौगोलिक-सांस्कृतिक इकाई के रूप में भी नहीं देखी जाती थी। ऐसे समय में विवेकानंद ने 'उठो-जागो...' का नारा दिया था और विश्व धर्म संसद में सनातन की अलख जगाई थी।

'उठो-जागो... का नारा वास्तव में कठोपनिषद् से आया है। कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय तीसरी वल्ली का 14वाँ मंत्र है :

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्या धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

'श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी' इस मंत्र का अर्थ इस प्रकार बताते हैं- ''उठो-जागो और श्रेष्ठ ज्ञानियों के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो। ज्ञान के बिना इस जगत में कुछ भी उन्नति साध्य नहीं हो सकती। यह आत्मज्ञान और आत्मोन्नति का मार्ग अत्यंत कठिन है वैसे ही जैसे तलवार की तीक्ष्ण धार पर चलना। इस पथ पर संभलकर चलना चाहिए, पथ से थोडा भी डिगे तो पतन हो जाएगा। सब ज्ञानी इस मार्ग का ऐसा ही वर्णन करते आए हैं। सदा सावधान रहना चाहिए। उठो-जागो, यहाँ सोने से काम नहीं चलेगा।''

सातवलेकर जी की इस व्याख्या में निहित अर्थ बडे गहरे हैं। कठोपनिषद् का यह मंत्र कहता है कि ज्ञान प्राप्त करने और उसे साधने का मार्ग अस्त्रों को साधने का

जितना ही कठिन है। यहाँ ज्ञान को अस्त्र के समान बताया गया है अर्थात् ज्ञान मारक और प्रतिरक्षा दोनों स्थितियों में कारगर हथियार है। ज्ञान के प्रयोग की विधा भी सबको सुलभ नहीं होती। विषय में पारंगत व्यक्ति ही ज्ञान का प्रतिपादन करने में सक्षम होता है। इसीलिए कहा गया कि श्रेष्ठ ज्ञानियों के पास जाने से ही ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है।

कठोपनिषद् का दूसरा नाम नचिकेतोपाख्यान है क्योंकि इसमें नचिकेता की कहानी है जो आत्मज्ञान की खोज करता है। स्वामी विवेकानंद ने भी नचिकेता की भाँति ज्ञान की खोज करने के पश्चात् 'उठो-जागो...' का उद्घोष कर भारत के सुषुप्त जन मानस को जगाया था। जब विवेकानंद 1893 में चिकागो के 'पार्लियामेंट ऑफ़ रिलीजस' में बोल रहे थे तब वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने भारत के 'सॉफ़्ट पॉवर' को विश्व के सामने प्रोजेक्ट किया था। उस समय वे भारत को एकीकृत सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं राजनैतिक इकाई के रूप में विश्व के सामने रख रहे थे।

जब हम किसी देश को एक सांस्कृतिक, भौगोलिक और राजनैतिक इकाई के रूप में प्रदर्शित करते हैं तब हम सीमाओं से घिरे उस क्षेत्र को राष्ट्र-राज्य के रूप में देख रहे होते हैं। तब हमें यह समझ में आता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा कितनी महत्वपूर्ण है और इसमें ज्ञान का कितना महत्व है। यह समझना थोडा कठिन है किंतु यदि अमेरिका के संस्थानों पर विचार किया जाए तो हम पाएँगे कि उन्होंने सदैव ही ज्ञान को एक अस्त्र के रूप में प्रयोग किया है।

प्राचीनकाल के युद्धों का अध्ययन करें तो हम पाएँगे कि पहले वे समूह शक्तिशाली होते थे जिनके कबीले बडे होते थे, फिर उनका प्रभुत्व रहा जो सैन्य बल के द्वारा अधिकाधिक भूमि पर कब्जा कर सकते थे। उसके बाद ब्रिटेन का प्रभाव रहा जिसकी नौसेना अत्यधिक शक्तिशाली थी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका पूरी तरह से सूचना आधारित युद्ध के बल पर विश्व शक्ति बना हुआ है। दूसरे शब्दों में कहें तो अमेरिका ने ज्ञान को अपना हथियार बनाया है जिसके बल पर वह प्रोपेगंडा फ़ैलाते हुए अपना दबदबा बनाए रखता है। रणनीतिक शब्दावली में इसे 'propaganda warfare' या 'information warfare' कहा जाता है।

अमेरिका ने ज्ञान को अस्त्र के रूप में प्रयोग करने के लिए बुद्धिजीवियों, लेखकों, पत्रकारों, वैज्ञानिकों, फ़िल्मकारों और कला जगत की हस्तियों की फ़ौज तैयार कर रखी है। जो पूरे विश्व में जाकर अमेरिका के नाम का ढिंढौरा पीटते हैं। इनके पीछे होते हैं ढेर सारे थिंक टैंक जहाँ बुद्धिजीवी बैठकर पचास वर्ष आगे की रणनीति बनाते हैं। इसमें केवल मिलिट्री स्ट्रेटेजी चिंतक ही नहीं होते बल्कि शिक्षा, अर्थशास्त्र, विज्ञान एवं तकनीक आदि विषयों के विशेषज्ञ होते हैं जिनका काम होता है पब्लिक पॉलिसी के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना और उस पर सरकार को अपने मत से अवगत कराना।

नस्सिम निकोलस तालेब भले ही यह कहते है कि पब्लिक पॉलिसी के चिंतकों की देश दुनिया को चलाने में कोई प्रत्यक्ष भूमिका। (skin in the game) नहीं होती परंतु वास्तविकता यह है कि अमेरिका में RAND कॉर्पोरेशन जैसे थिंक टैंक में बैठे चिंतक दिन-रात यही रणनीति बनाते हैं कि दक्षिण एशिया में अमेरिका किस प्रकार विप्लव की स्थिति बनाए रखे अथवा मध्यपूर्व में किस प्रकार अपने हितों की रक्षा की जाये।

हमारे नवयवकों के लिए माइल स्टोन ये सिद्धांत स्वामी विवेकानंद ने 'उठो-जागो' का उद्घोष इसीलिए किया था क्योंकि वे देश में कभी न सोने वाले ज्ञानी योद्धाओं को देखना चाहते थे। ऐसे योद्धा जिनके पास ज्ञानरूपी अस्त्र हों और जो कभी बरगलाए न जा सकें। आज का युवा वर्ग जब किसी के द्वारा बरगला दिए जाने पर ऊँचे सपने देखना बंद कर देता है तब उसकी इच्छाशक्ति मर जाती है। आज के युवाओं को स्वामी विवेकानंद जी के सिद्धांतों पर चलना चाहिए, क्योंकि वे अपने जीवन में अपने अंतिम और उच्च लक्ष्य पर पहुँच सके।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - 9403727927

एन्नैयुम् पार्तु एन्नियल्वैयुम् पार्त्तु, एण्णिल् पल्गुणत्त
उन्नैयुम् पार्क्किल् अरुळ्शेय्वदे नलम्, अन्नि येन्बाल्
पिन्नैयुम् पार्क्किल् नलमुळदे उन्पेरुम् करुणै -
तन्नै येन्पार्प्पर्, इरामानुज! वुन्नै च्चार्न्दवरे ॥७०॥

भो भगवन् रामानुज! गुणलवदरिद्रमपराधसहस्रभाजनं मामवलोक्य, आकिञ्चन्यानन्यगतित्वरूपं मत्स्वभावं चावलोक्य अनघानर्घगुणनिधिं स्वात्मानं चावलोक्य मयि कृपाविष्करणमेव भवतो युक्तरूपम्। अथ गाढविमर्शे कृतेऽपि गुणकणिकाऽपि मयि सुलभा न स्यात्। गुणदरिद्रस्य जनस्यास्य तिरस्करणमेव वरमित्यभिसन्धीयते जेद्भवता तर्हि भवदाश्रिता महान्तो भवदीयां कृपां लघीयसीं खलु मन्येरन्। माभून्नाम तथा मन्तुमवकाशः॥

हे रामानुज स्वामिन्। (गुणलेश से भी दरिद्र और अनवधिक दोषों से पूर्ण) मुझको देखकर, आकिंचन्य व अनन्यगतित्वरूप मेरा स्वभाव देखकर और असंख्येय कल्याणगुणभरित अपने को भी देखने पर, मुझ पर कृपा करना ही आपके लिए उचित होगा। यह छोडकर, फिर भी यदि आप मुझमें किंचित् गुण ढूंढने का ही प्रयत्न करेंगे, (और यह निश्चय कर डालेंगे कि विना किंचित्मात्र गुण के, इसका स्वीकार नहीं करना चाहिए,) तो आपके आश्रित भक्तजन आपकी महती कृपा के बारे में क्या सोचेंगे? (उसे बहुत अल्प ही मानेंगे; अतः इस अपयश का अवकाश मत दीजिए।) (विवरण - यह तो साधारण शास्त्र की मर्यादा है कि पुण्यवान मानव ही गुरुकृपा का पात्र होगा। परंतु जरा विचार करने पर कहना पडता है कि पुण्यवान के प्रति की जानेवाली कृपा अत्यल्प कृपा है, अथवा कृपा कहलाने योग्य ही नहीं। श्रेष्ठ, अथवा सच्ची कृपा तो वही होगी, जो कि सर्वथा गुणशून्य व पापपूर्ण व्यक्ति पर की जायगी। अतः आप मेरे पाप देखकर दया करने में प्रोत्साहित हो जाइए; इसके बदले में यदि आप संकोच पायेंगे, तो आपके पादाश्रित महात्मालोग आपकी कृपा को अत्यल्प समझ लेंगे।)

गुणशून्य व पापपूर्ण व्यक्ति पर की जानेवाली कृपा ही कृपा कहलाने योग्य है।

क्रमशः

गतांक से

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया
मोबाइल - 9482365339

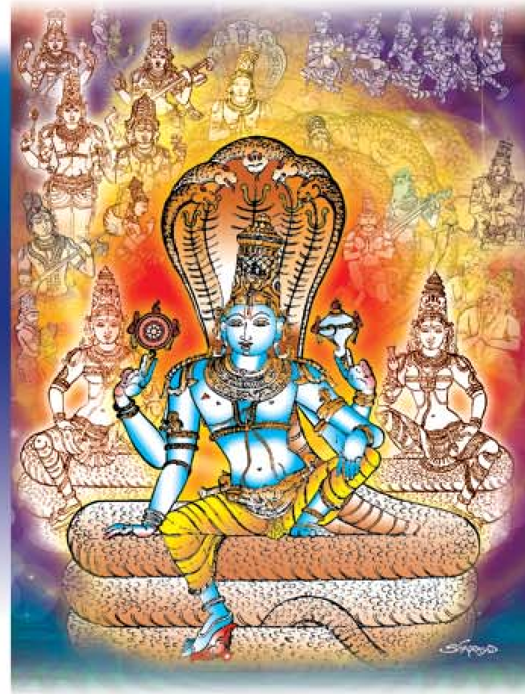

10) तिरुपुळ्ळम् - पूतङ्कुडि - (पुळ्ळ - पूतङ्कुडि)

यह दिव्य क्षेत्र कुंभकोणम से चेन्नै-तिरुच्चि मेन लाइन में तिरुच्चि से लग-भग 88 कि.मी. पर है। कुम्भकोणम से बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - वल्विल रामन - पूर्वाभिमुखी - भुजंग शयन।

उत्सवमूर्ति - वल्विल रामन के चतुर्भुज हैं।

तायार (माता जी) - पोट्रामरैयाल (हेमाम्भुजवल्लि) (अलग मंदिर में विराजमान)।

तीर्थ - जटायु तीर्थ - कृत्र तीर्थ।

विमान - शोभन विमान।

प्रत्यक्ष - चक्रवर्ति तिरुमहन, वृतराजन।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद।

विशेष - यह एक एतिह है कि जटायु ने मोक्ष प्रदान के बाद यहाँ श्रम परिहार किया। सीता हरण की घटना के बाद श्रीराम के दर्शन - इसलिए सीता देवी साथ नहीं है।

11) तिरु आदनूर

यह क्षेत्र कुम्भकोणम से 8 कि.मी. की दूरी पर है। (कुम्भकोणम, चेन्नै-तिरुच्चि स्टेशन मेन में तिरुच्चि से 88 कि.मी. की दूरी पर है।) सिरुप्पुल्लमपूतंगुडी से 1 कि.मी. है।

मूलमूर्ति - पाण्डवकृमैयन, पूर्वाभिमुखी, भुजंग शयन। सिर के नीचे 'मरक्काल' (अनाज मापने एक उपकरण, बाएँ हाथ में ताडपत्र एवं एलुत्ताणि (लोहे की लेखना) हैं।

तायार (माताजी) - रंगनायकी।

तीर्थ - सूर्य पुष्करिणी।

विमान - प्रणव विमान।

प्रत्यक्ष - तिरुमंगै आल्वार, कामधेनु।

मंगलाशासन - एक आल्वार, एक दिव्य पद।

12) तिरुक्कुडन्दै कुम्भकोणम (भास्कर क्षेत्र)

शारंगपाणि स्वामी मंदिर - भास्कर क्षेत्र। कुम्भकोणम रेल्वे स्टेशन से (चेन्नै-तिरुच्चि मेन-लाइन में तिरुच्चि से 88 कि.मी. की दूरी पर है।) कुम्भकोणम शहर से 3 कि.मी. पर है। यह बड़ा शहर है, सब सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

मूलमूर्ति - शारंगपाणि, आरावमुदन, अपर्याप्तामृतन आदि कई नाम हैं। पूर्वाभिमुखी - आदिशेष शयन उत्थान शयनम (उत्थान शयन) तिरुमलिशै आल्वार की प्रार्थना के अनुसार उत्थानशायी हैं।

तायार (माताजी) - कोमलवल्लि (मंदिर के बाहर नहीं पधारती)।

तीर्थ - हेमपुष्करिणी, (पोट्रामरै कुळम) कावेरी नदी, अरशलारु (हरिशाल आरु)।

विमान - वैदिक विमान, (वेद विमान)।

प्रत्यक्ष - हेम मह ऋषिः।

इस मंदिर की शारंगपाणि सन्निधि में श्रीमान नाथमुनि से नम्माळ्वार के द्वारा अनुगृहीत आरावमुदे से आरंभ होने वाले दिव्य पदों का दशक सुना तिरुवायमोळि के सम्पूर्ण पद जानने की अभिलाषा हुई।

बड़ी तपस्या के बाद नम्माळ्वार से योगदशा में तिरुवायमोळि का उपदेश प्राप्त किया। नालायिर दिव्यप्रबन्ध का संकलन किया। यह ऐतीह है कि हेम ऋषि की पुत्री के रूप में जन्म कोमलवल्लि तायार ने कठिन तपस्या की। उनसे प्रसन्न होकर श्री शारंगपाणी भगवान ने कोमलवल्लि से विवाह कर लिया।

यहाँ का सुन्दर एवं बृहत रथ (चित्तिरै-तेर) बड़ा प्रसिद्ध है। मंदिर का गर्भगृह ही एक रथ के रूप में पत्थर से निर्मित है - जिसके बड़े 2 चक्र हैं।

मेट्टु श्रीनिवासन, रामचन्द्र, निगमांत देशिकन एवं आळ्वार की सन्निधियाँ हैं। निकट, चक्रपाणि मंदिर एवं रामस्वामी मंदिर हैं। चक्रपाणी भगवान आठभुज के साथ दर्शन देते हैं। बड़े वर प्रसादी है। चक्रपाणि भगवान-शारंगपाणी भगवान के छोटे भाई माने जाते हैं। दोनों को एक ही समय कई उत्सव मनाए जाते हैं एवं दोनों की शोभा-यात्रा साथ निकलती है।

रामस्वामी मंदिर में भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण, सीता एवं आंजनेय समेत श्रीराम पट्टाभिषेक के दर्शन मनोहारी है। प्राकार में सम्पूर्ण चित्रों से अंकित है।

सृष्टि के लिए आवश्यक मूल सामग्री से भरा (अमृत कुम्भ) घडा प्रवाह में आकर यहाँ रुक गया था। इसलिए तिरुक्कुडन्दै-कुम्भकोणम नाम पड़ा। यहाँ बारह वर्ष में एक बार महामखम मनाया जाता है। नालायिर दिव्यप्रबन्ध का श्रीमन नाथमुनि ने प्रतिष्ठापित किया। इसलिए 'आरावमुदाल्वान' नामकरण किया। नम्माल्वार ने द्राविड श्रृतिदर्शकर नामकरण किया।

मंगलाशासन - 7 आल्वार, 51 दिव्य पद।

यहाँ पांचरात्र क्रम के अनुसार आराधना की जाती है। गर्भगृह-मुख मण्डप में जाने के लिए दो प्रवेश द्वार हैं। एक दक्षिणायन में खुलता है - दूसरा उत्तरायण में।

क्रमशः

आणिवर आस्थानम

- श्रीमती सुधा रंगराजन
मोबाइल - 9390870707

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के द्वारा तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी के आनंदनिलय मंदिर में प्रतिदिन अनेक धार्मिक कार्यक्रम और उत्सव मनाए जाते हैं।

उन में 'आणिवर आस्थान' भी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण धार्मिक उत्सव है। यह भगवान श्री वेंकटेश्वर की आय-व्यय से संबंधित है। धार्मिक मान्यता है कि भगवान अपने विवाह-हेतु धन-देव कुबेर से उधार लिया था। उसे वे कलियुग के अंत तक चुकाते रहेंगे। इसलिए आय-व्यय संबंधी यह उत्सव अत्यंत विशेष का माना जाता है। यह उत्सव मंदिर के खातों को उसके मालिक, भगवान श्री वेंकटेश्वर को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। यह उत्सव सौर कैलेंडर के अनुसार दक्षिणायन में 'कर्काटक संक्रांति' पर मनाया जाता है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार यह उत्सव ज्यादातर **17** जुलाई को पड़ता है। 'आस्थान' (बैठक), जिसे 'कोलुवु' भी कहा जाता है, तमिल महीने 'आणि' के पहले दिन आयोजित किया जाता है। जिस प्रकार राजा की राजसभा में बैठके आयोजित

करते हैं, ठीक उसी प्रकार यह भगवान श्रीनिवास की राजसभा मानी जाती है।

तिरुमल मंदिर में प्रतिदिन 'कोलुवु श्रीनिवासमूर्ति' का आस्थान/बैठक किया जाता है। भगवान के सुप्रभात, विश्वरूप दर्शन और तोमाल सेवा जैसे दैनिक अनुष्ठानों के बाद भगवान की 'कोलुवु श्रीनिवासमूर्ति' को स्नपन मंडप में ले जाकर एक स्वर्ण सिंहासन पर बिठाया जाता है। कर्मचारी भगवान के सामने 'पंचांग श्रवण' करते है, अर्थात् पंचांग के अनुसार तिथि, वार, नक्षत्र, राशि सब पढा जाता है। भगवान के सामने पहले दिन मंदिर के द्वारा प्राप्त धन, सोने और चांदी के आभूषणों के रूप में कमाई और शुद्ध आय उन्हें प्रस्तुत की जाती है। मंदिर में भक्तों की संख्या भी सार्वजनिक रूप से घोषित किया जाता है।

आणिवर आस्थान को वार्षिक लेखा प्रस्तुत करने की दृष्टी से महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दिन श्री वेंकटेश्वर के उत्सवमूर्ति (मलयप्पस्वामी) के साथ श्रीदेवी एवं भूदेवी का 'स्नपन अभिषेक' किया जाता है। विष्वक्सेन मूर्ति, जिन्हें भगवान का 'सर्व सेनापति' माना जाता है, उनका मलयप्पस्वामी के साथ अभिषेक एकांत में किया जाता है। अभिषेक के पश्चात उत्सवमूर्ति का आस्थान (बैठक) मंदिर के 'तिरुमहामणि मंडप' या 'घंटा मंडप' में गरुडाल्वार सन्निधि के सामने किया जाता है। इस विशेष पर्व पर देवताओं को गहनों एवं सुगंधित फूलों से अलंकृत किया जाता है।

आस्थान कार्यक्रम पर बडे एवं छोटे जीयंगार, एकांगी, अर्चक, आचार्य पुरुष, वेद पंडित, तिरुमल तिरुपति देवस्थान के कार्यकर्ता और अन्य अधिकारी उपस्थित होते हैं। विशेष प्रसाद का भोग लगता है। मूलमूर्ति को समर्पित करने के लिए बडे जीयंगार स्वामी एक भक्ति यात्रा में छः रेशमी कपडे लाते है, जिन्हें गर्भगृह के अंदर पीठासीन मूलविराट को समर्पित करते हैं। इन वस्त्रों में से चार वस्त्र तुरंत सुशोभित होते हैं। मुख्य पुजारी सम्मान के प्रतीक के रूप में मूलविराट के सिर पर परिवट्टम (पगड़ी) बांधते है। अन्य दो वस्त्रों में से एक उत्सवमूर्ति को और एक आस्थान में बैठे विष्वक्सेन को अर्पित किये जाते हैं।

मूलमूर्ति के पवित्र चरणों पर बड़े और छोटे जीयंगार स्वामियों की व्यक्तिगत मुहर (चिह्न), अधिकारी की अधिकारिक चिह्न, मंदिर की चाबी रखी जाती है। इस अवसर पर भक्तों के द्वारा दिए गए योगदान को थैले में डालकर सील कर दिया जाता है, और एक प्रतीकात्मक संकेत के रूप में हुण्डी में डाल दिया जाता है। प्रसाद के रूप में भक्तों से एक-एक रूपये लेने के बाद भगवान को 'रूपाई आरती' अर्पित की जाती है।

इसके पश्चात देवताओं को पुष्पों से अलंकृत करके पालकी में विराजमान होकर शोभा-यात्रा निकाली जाती है। देवताओं के दर्शन सभी भक्तों को प्राप्त होने के बाद, देर शाम को मंदिर में लाया जाता है, जो वार्षिक आयोजन के समाप्ती का प्रतीक है। यह प्रतिवर्ष मनाये जानेवाला वार्षिक उत्सव है।

गतांक से

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

विष्णु भगवान ने वराह देव को सारी घटनाएँ सुनायीं। अपने वेंकटाचल आने के पीछे का लक्ष्य बताया। सिर के चोट की घटना स्पष्ट की। बृहस्पति के द्वारा सूचित जडिबूटियों की बात बतायी। उन्हें ढूढने निकलने की बात भी कही। इन सबसे दोनों के मिलन की बात भी स्पष्ट हो गयी। अन्त में विष्णु भगवान ने कहा - ''हे वराह! सिर का घाव तीव्र है। मेरा सिर दुःख रहा है। कष्ट से त्रस्त हूँ। अधिक रक्त बह गया है। मेरी शक्ति क्षीण हो गयी है। दुर्बलता के कारण मैं आप से भिड नहीं पा रहा हूँ। आपकी भयानक घुरघुराहट मुझे एक प्रकार से चुनौती ही थी। इसीलिए मैंने अपने आप को छिपा लिया है। अब आपने स्वयं सहृदयता से बात चलायी, मेरी - दर्द कुछ शमित हुई। व्यथा कम हुई। मैं आपके पास आ सका हूँ। वैकुंठ में न रहने की इच्छा के कारण ही मैं यहाँ वेंकटाद्रि पहुँच गया हूँ। एक वल्मीक में वास कर रहा हूँ। यह क्षेत्र आपका है। आपमें और मुझमें कोई अन्तर नहीं है। मैंने आपको तुरंत पहचाना है। अब मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे अपने पास रहने दें।''

तब वराहस्वामी ने विष्णु से कहा - ''मेरा बहुत समय तक वेंकटाद्रि छोड रहने का कारण वृषभासुर है। उसको ढूँढते-ढूढते मैं बहुत दूर चला गया था। उसके साथ सुदीर्घ युद्ध चला। मैं भूलोक वैकुंठ वेंकटाद्रि से दूर रहा। उसको मार कर मैं अभी लौट आया हूँ। चलिए, हम दोनों का मिलना हो गया। हमारा यह मिलन हमारे लिए स्नेह बन्धन का अवसर बन गया। अब मुझे अत्यंत लाभ मिल गया।'' वराह स्वामी की उत्तरदायित्वपूर्ण भावना को पाकर विष्णु को भी सुख मिला। अच्छा संदर्भ पाकर विष्णु भगवान ने अपनी इच्छा वराह स्वामी के सामने रखी- ''हे वराह जी! मेरे लिए रहने लायक थोडी जगह मुझे दीजिएगा। कलियुगान्त तक मैं यहाँ रहूँगा।''

वराह स्वामी को आश्चर्य हुआ। वे जानते हैं कि गरीब को झूठी आशाएँ नहीं देनी चाहिए और धनवान तथा बलवान को आश्रय देना भी उचित नहीं। इसे ध्यान में रखकर वराह स्वामी ने कहा कि अगर वे सही मूल्य चुकायेंगे तो जमीन अवश्य मिलेगी। वह भी केवल एक सौ फुट की जगह। वराह जी को मूल्य चुकाने की बात पर विष्णु ने प्रार्थना की - ''अगर लक्ष्मी मेरे पास होती तो अवश्य मैं मूल्य चुकाता। लक्ष्मी मुझे छोडकर चली गयी हैं। वे कोल्हापुर में रह रही हैं। मुझे पैसा किसकी सेवा करने से मिलेगा?

मेरी तो यहीं रहने की इच्छा है। इसका एकमात्र कारण भक्तों की मनौतियाँ हैं। मैं आजकल उन्हीं पर निर्भर हूँ। समस्त पृथ्वी अब आपकी है। आपने ही उनकी रक्षा की है। पाताल लोक से उभारे हैं। (वास्तव में हिरण्याक्ष ने भूमि को डुबा रखा था तो वराह स्वामी ने अपने दान्तों पर उठाकर बाहर रखा।) इसलिए अब आप मुझे थोडी जगह दे दीजिए। उसकी सीमाएँ बाँधकर रखिएगा। मैं उन्हीं सीमाओं में रहूँगा। एक साधारण मानव के समान रहूँगा। किन्तु लोगों को अवश्य आकर्षित करूँगा। उन पर ऐसा प्रभाव डालूँगा कि वे रोज आपकी आराधना पंचामृत (पानी, दूध, दही, घी तथा शहद का मिश्रण) से करेंगे।'' भक्तगण सबसे प्रथम आपकी पूजा करेंगे, प्रथम नैवेद्य और प्रथम दर्शन करेंगे, आपको ही कानुक (भेंट) देंगे।

वराह जी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। एक सौ फुट जगह विष्णु भगवान को दे दी। इतना ही नहीं अपने पास रहनेवाली वकुलमालिका को उनकी सहायता के लिए उनके साथ भेजा। तब से वकुलमालिका हर दिन विष्णु को श्यामका अन्न शहद के साथ मिलाकर खिलाने लगी। दवा-दारू बनाकर उनके सिर के घाव की सुश्रूषा भी की। उनकी नित्य-नैमित्तिक आवश्यकताओं की पूर्ति में तन्मय भाव से लगी ही रही। भक्ति और प्रेम के मिश्रित भाव से उनकी देख-भाल करती रही। वकुलमालिका और कोई नहीं, द्वापरयुग की यशोदा माता ही थी। वह श्रीकृष्ण की लीलाएँ मात्र से संतुष्ट नहीं थी। वे तो बाल लीलाएँ थीं। उनके आगे के जीवन की लीलाओं से भी आनंद पाना चाहती थी। इसीलिए यशोदा माँ ने ही वकुलमालिका बनकर पुनर्जन्म लिया। वेंकटाचल पर श्री वेंकटेश्वर की सेवा में लीन होकर भगवान की जीवन लीला से जुड गयी।

श्री वराह ने वेंकटाचल की महत्ता और महिमा बताने के बाद श्री स्वामिपुष्करिणी और अन्य तीर्थों का भी विवरण दिया। श्री वराह मंत्र की विशिष्टता बतायी। अब तक घटी घटनाओं के साथ आगे घटित होनेवाली से विवाह का भी संकेत दिया। वैवस्वत मन्वंतर के आदि और कृत युग की बातें तथा भारत के भविष्य में घटनेवाली विशेषताओं का भी संकेत दिया- ''धाता यथा पूर्वं अकल्पयत्।'' (वरा. पु. भाग - 2, अ. 3, श्लो. 1)

इसके बाद वैवस्वत मनु के समय के एक कृतयुग में वायुदेव की बात भी की। उस समय वायुदेव ने घोर तपस्या की थी। उस समय भगवान के वक्षःस्थल पर श्री लक्ष्मीदेवी शोभित थी। भगवान उनकी तपस्या से लीन हुए। प्रत्यक्ष होकर एक वर उन्हें दिया था। उसके अनुसार वे श्रीनिवास बनकर श्रीदेवी और भूदेवी समेत वेंकटाद्रि पर आनंदनिलय विमान में रहेंगे। उसी विमान में वास करेंगे।

देव सेनानी कुमार स्वामी भी उनकी आराधना करेंगे। अगस्त्य मुनि ने इस पर्वत पर बारह वर्ष की तपस्या की और चाहा कि कल्पांत तक विष्णु भगवान वेंकटाद्रि पर रहें और भक्तों की इच्छाएँ पूरी करें। विष्णु ने तब स्वीकारा था। तत्परिणामस्वरूप श्री लक्ष्मीदेवी और भूदेवी सहित यहाँ विराजित रहेंगे। इस प्रकार वायुदेव और स्कंद (कुमार स्वामी) की इच्छाएँ पूरी हुईं। वे भी उनकी सेवा में रत हुए। (वरा. पु. भाग - 2, अ. 3, श्लो. 2 - 11)

* * *

क्रमशः

'घी' अच्छे स्वास्थ्य के लिए आजीवन साथी

आयुर्वेद

- डॉ सुमा जोषि, मोबाइल - 9449515046.

'घी' का अर्थ है शुद्ध गाय का घी। यह भारत में पारंपरिक रसोई से, दुनिया भर में उडान भरी है। आयुर्वेद का पर्याय बने इस प्राचीन सूपर-फुड ने अन्य विकल्पों, अस्वास्थ्यकर वसा और मज्ञा पर आधुनिक बहसों को निर्विवाद रूप से पीछे छोड दिया।

घी को मक्खन से बनाया जाता है। चूंकि यह दूध का सार है, इसलिए इसे कभी-कभी 'दूध का सबसे परिष्कृत अन्त उत्पाद' भी कहा जाता है। हमारे प्राचीन शास्त्रों में घी को देवताओं का भोजन कहा गया है।

दूध और अन्य डेयरी उत्पादों की तुलना में घी

लैक्टोज और कैसिइन की अनुपस्थिति घी को उन लोगों के लिए उपयुक्त बनाती है जो डेयरी को पचा नहीं सकते (Lactose Intolerance). यह दूध की तुलना में अधिक स्थित है और कमरे के तापमान पर लंबे समय तक रहेगा।

इसका धुआँ बिन्दु 450° पर होने के कारण इसे मक्खन और तेल के विकल्प के रूप में भी उपयोग किया जा सकता है। धुआँ बिन्दु जितना अधिक होगा, तेल की गुणवत्ता और शोधन उतना ही बेहतर होगा। घी एक भारी, घन और मुलायम होता है। शरीर की पुष्टीकरण में सहायक होता है। यह हमारे और पर्यावरण में सात्विक गुणों को बढ़ाने में भी मदद करता है। मन और शरीर को लाभ देता है।

घी पेट में एसिड के स्राव को उत्तेजित करता है जो भोजन को तोडने में मदद करता है। यह विषाक्त पदार्थों को हटाने में भी मदद करता है और उन्मूलन को बढ़ावा देता है। इस प्रकार पाचन गुणवत्ता में सुधार करता है। घी पोषक तत्वों के बेहतर अवशोषण को बढ़ावा देता है। इसके साथ दी जानेवाली आयुर्वेदिक दवाइयों की उपचार शक्ति को भी बढ़ाता है। घी ब्यूटायरेट फैटी एसिड का मुख्य स्त्रोत है। यह आंतों की दीवारों के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है जिससे सूजन की सम्भावना कम हो जाती है। यह लीकी गट सिंड्रोम, इरिटेबल बाउल सिंड्रोम (आई बी एस), क्रोहन रोग और कोलाइटिस जैसी स्थितियों के लिए आदर्श है। यह फैटी एसिड कोलन कैंसर के खतरे को कम करने में भी मदद करता है।

यह शुष्क त्वचा, शुष्क बृहदान्त्र, सूजन और कठोर जोडों को कम करता है।

यह याददश्तः और बुद्धि को बढ़ाता है। यह मानसिक और भावनात्मक असन्तुलन के लिए फायदेमन्द है। घी एलर्जी, गठिया और ऑटो-इम्यून स्थितियों को नियन्त्रित करने में मदद करता है, क्योंकि इसमें एंटी-इंफ्ले मेटरी एजेंट होते हैं।

आरोग्य में घी का प्रयोग

सुबह भोजन से पहले एक चम्मच घी लेना है। आँवला पाउडर और किशमिश को घी में मिलाकर कुछ देर तक मुँह में रखें। यह तालू और मौखिक गुहा की सूखापन को दूर करने में मदद करता है। पेट की जलन को दूर करने के लिए हरीतकी के चूर्ण को घी के साथ सेवन करें।

एनीमिया के इलाज के लिए त्रिफला के काढ़े में घी और चीनी मिलाएँ। यह यक्रृत की कार्य क्षमता को बढ़ाता है। काम के सिलसिले में घम में बाहर निकलने से पहले नथुने की भीतरी दीवार पर घी एक पतली परत लगाने की कोशिश करें। यह वास्तव में धूल एलर्जी से बचने में मदद करता है। आयुर्वेद में गर्भावस्था में घी को एक आवश्यक आहार सामग्री के रूप में सुझाया गया है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि घी को एक मीठे पदार्थ के रूप में माना जाता है जो जन्म से ही किसी के लिए भी अनुकूल और अभ्यस्त होता है।

कब्ज दूर करने के लिए रात को सोने से पहले 1 से 2 चम्मच घी गर्म दूध के साथ लें। सिरदर्द से राहत पाने के लिए दिन में एक बार घी की 2-3 बूंदें नाक के प्रत्येक छिद्र में डालें। शरीर में सूखापन कम करने के लिए 1-2 चम्मच घी खाली पेट लें। बेहतर परिणाम के लिए इसे तीन महीने तक दिन में एक बार लें।

त्वचा की शुष्कता को कम करने के लिए दिन में एक बार या सप्ताह में तीन बार सीधे त्वचा पर घी का प्रयोग करें। चीनी के साथ घी को होठों पर लगाएँ साथ में स्क्रब करें। इससे वहाँ पर जमी हुई मृत कोशिकाओं को हठाने में मदद मिलती है। सिरदर्द से राहत पाने के लिए दिन में एक बार घी से माथे और पैरों पर मालिश करें।

बालों का झडना कम करने के लिए हफ्ते में तीन बार स्कैल्प पर नारियल के तेल के साथ घी लगाएँ। घाव पर हल्दी पाउडर के साथ घी लगाने से घाव जल्दी ठीक होता है और जलन भी कम होती है। 'घी' को बंद नाक या नाक की रुकावट में घी के बूंदों को डालने से सहायता मिल सकता है। क्योंकि यह नाक के मार्ग को चिकनाई देता है।

घी से अपने चहरे पर मालिश करें। 15 मिनट बाद धों लें। यह त्वचा को चिकना और मुलायम बनायेगा। बेसन, कच्चा दूध और घी मिलाकर एक महीन पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को लगाकर 15-20 मिनट के लिए रख दें। खूबसूरत और चिकनी त्वचा के लिए सादे पानी से धो लें। डार्क सर्कल्स के लिए कुछ दिनों तक नियमित रूप से आंखों के नीचे घी लगायें। आराम से कम हो जायेंगे।

घी का प्रयोग कहाँ नहीं करना चाहिए

1) अगर शरीर आम (bodytoxine) ज्यादा हो। 2) उच्च कोलेस्ट्रॉल में। वजन अगर अधिक हो। 3)कफ से पीडित हो। 4) ज्वर से पीडित हो। 5) पीलिया में। 6) हेपेटाइटिस में। 7) फैटी लीवर में। 8) जब गर्भवती महिला को सर्दी या बदहजमी हो तो घी से परहेज करें।

निष्कर्ष

घी हम भारतीयों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसका आध्यात्मिक के साथ स्वास्थ्य में भी उपयोगी है। आयुर्वेद में इसका अत्यधिक महत्व है। अगर उपयोग करने में, कुछ सन्देह है, तो तत् संबंधित आयुर्वेद डाक्टर से मिलें। यहाँ पर विषय मात्र जानकारी के लिए दिया गया है।

जुलाई महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र
मोबाइल - 9989376625

मेष राशि - सकारात्मक परिवर्तन, लाभ के अनेकानेक अवसर मिलेंगे। गृहस्थ जीवन सुखी, उच्च व्यापारियों से व्यवसायिक लाभ, आकस्मिक लाभ होगा। पारिवारिक सहयोग, छात्रों को प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफलता। यज्ञ-यागादि मंगल कार्यों का संपादन।

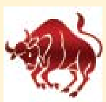

वृषभ राशि - मासफल मध्यम है। नाम-यश वैभवशालिता की वृद्धि, धन प्राप्ति, वस्त्र लाभ, आरोग्य सुख, संतान पक्ष से सहयोग मिलेगा, व्यवसाय में प्रगति। विद्या बुद्धि का विकास, आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा। राजनीतिक मामलों में सफलता।

मिथुन राशि - अनावश्यक विवादों से बचना चाहिऐ। मानसिक तनाव बढ़ेगा, मातृपक्ष से कष्ट, स्त्री को पीड़ा होगी। वाणी व्यवहार की कुशलता, कार्य-सिद्धि में सहायक। दाम्पत्य सुखों में अवरोध। धर्माचरण से मनःशक्ति उत्पन्न होगी। रामरक्षा स्तोत्र का नियमित पारायण हितकर रहेगा।

कर्कट राशि - वाणी-व्यवहार को नियंत्रित रखे अन्यथा अनावश्यक वाद-विवाद झगड़ा होने की सम्भावना। व्यवसायिक बाधा, अनावश्यक धन खर्च-जिससे मानसिक चिंता। पारिवारिक दायित्व, कार्य-व्यापार में शिथिलता बढेगी। भ्रातृ पक्ष से तनाव।

सिंह राशि - नौकरी-व्यवसाय में सफलता, धनागम, पद-प्रतिष्ठा की वृद्धि, गृहस्थ जीवन सुखी, साहस पराक्रम का योग उत्तम है। स्थान परिवर्तन सुखद। किसी नये व्यापार की स्थापना होगी। विद्यार्थियों को अनुकूलता, निर्माण कार्यों में प्रगति।

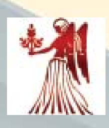

कन्या राशि - मासफल उत्तम रहेगा, नवीन योजनाओं का शुभारम्भ, आत्मीयजनों का सहयोग-समर्थन, नौकरी में उल्लास। कारोबार के क्षेत्र में उन्नति होगी। सन्तान पक्ष की भाग्योन्नति। शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न रहेगा। गृहस्थ जीवन सुखी। लाभ के अनेकानेक अवसर मिलेंगे।

तुला राशि - नौकरी-व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी। राजनीतिक उलझन, तनाव विवाद, ऋणभार बढ़ेगा, अधिक पूँजी निवेरा सट्टा लाटरी से हानि होगी। सन्तान पक्ष की चिन्ता रहेगी। निर्माण कार्यों में गतिरोध।

वृश्चिक - रोग मुक्ति, सुख-सम्मान लाभ, अभीष्ट कार्य सिद्धि। गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति। न्यायालयीय कार्यों में प्रगति होगी, धर्म के प्रति रुचि बढ़ेगी। स्थिर सम्पत्ति-जायदाद के कामों में प्रगति, नौकरी में उल्लास, विद्या-बुद्धि का विकास।

धनु राशि - मासारम्भ सामान्य फलदायी है, नौकरी, व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी। नौकरी में पदोन्नती का योग है। कार्यावरोधक तत्त्वों की निवृत्ति, सद्विचारों का उदय होगा। श्रेष्ठजनों का समागम, व्यवस्थित दिनचर्या, रुके धन की वसूली।

मकर राशि - शनि वक्री होकर मकर राशि पर रहेंगे, दाम्पत्य जीवन में क्लेश होगा। संतान पक्ष से परेशानी, धर्माचरण से आत्मिक विकास होगा। वाणी-व्यवहार की कुशलता से ही काम बन सकते हैं। सुन्दरकाण्ड का पाठ श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

कुम्भ राशि - मास फल मध्यम है। नौकरी व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी, धनागम सामान्य होगा। यात्रा व्यय, पारिवारिक दायित्व निर्वहण में कठिनाई, माता को कष्ट। राजनीतिक पक्ष से परेशानी, अन्तर्द्वन्द्व, व्यय की अधिकता, शैक्षणिक गतिरोध।

मीन राशि - इस मास के आरम्भ में धनाभाव, स्त्री-संतान रोग-व्याधि से पीड़ित होंगी, प्रतियोगिता के क्षेत्र में रुकावट, नौकरी सामान्य, व्यापार में प्रगति किन्तु अपेक्षित लाभ नहीं। घर-परिवार की चिन्ता, महत्वकांक्षा मन्द पड़ेगी। देवताराधना से परेशानियाँ कम होंगी।

नीतिकथा

सत्संग का फल

- श्रीमती के प्रेमा रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

एक बार महर्षि विश्वामित्र ने महान यज्ञ को रचने का निश्चय किया। उसके अनुसार उन्होंने उसका प्रबन्ध करके यज्ञ की पूर्ति की। यज्ञ को सफलता पूर्वक समाप्त करने के बाद वे अपने पास की सारी चीजों को दान में दे रहे थे। यह खबर ऋषि वशिष्ठ को मिली। उन्होंने सोचा कि महर्षि विश्वामित्र से दान लेना बड़ा गौरव है। इसलिए वे उनसे मिलने यज्ञशाला में आ पहुँचे। ऋषि वशिष्ठ के आगमन से महर्षि विश्वामित्र अत्यंत खुश हुए। उन्होंने ऋषि वशिष्ठ का उचित सत्कार किया और बडी खुशी से उनको भी दान दिया। दान पाकर ऋषि वशिष्ठ अपने आश्रम में आ पहुँचे।

कुछ समय बाद ऋषि वशिष्ठ के मन में महर्षि विश्वामित्र की तरह एक यज्ञ रचने की इच्छा पैदा हुई। उन्होंने अपनी ऐसी पवित्र इच्छा को तुरंत कार्यान्वित किया। सारे संसार की भलाई को लक्ष्य करके रचा गया वह यज्ञ भी समाप्त हुआ। यज्ञ की पूर्ति के बाद ऋषि वशिष्ठ अपने पास की चीजों को दान करने लगे। तब तक यह खबर महर्षि विश्वामित्र को पहुँची। वे ऋषि वशिष्ठ से दान पाने के विचार से वहाँ आ पहुँचे। लेकिन दुर्भाग्य ऐसा था कि उनके आ पहुँचने के पहले ही ऋषि वशिष्ठ ने अपने पास की सारी चीजों को दान में दे दिया था। इसलिए अब उनके पास महर्षि विश्वामित्र को दान देने के लिए कुछ नहीं था।

यह जानकर महर्षि एकदम क्रोधित हो उठे। उन्होंने ऋषि वशिष्ठ को देखकर चिल्लाया, ''आप ने मुझे कुछ न देकर मेरा अपमान कर दिया है। आपने पहले ही ऐसा निश्चय कर लिया है कि मुझे खाली हाथ भेजना है। इसलिए आपने मेरे आने के पहले ही सब कुछ दान कर दिया है। आपके ऐसे व्यवहार से मैं बहुत अपमानित हूँ।'' यह सुनकर ऋषि वशिष्ठ एकदम चौंक उठे। उन्होंने महर्षि को सांत्वना देते हुए कहा, ''आप क्रोध मत कीजिए। दान के बारे में आप चिंता न करें। अब मेरे पास कोई चीज न होने पर भी उत्तम जन के संपर्क में आने का चौबीस मिनट का फल याने सत्संग का फल है। मैं अब आपको उसमें से छे मिनट का फल देता हूँ।''

इतना सुनाने के बाद भी महर्षि विश्वामित्र का क्रोध दूर नहीं हुआ। तब ऋषि वशिष्ठ ने उनसे निवेदन किया, ''आप इस धरती को प्रकाश देने वाले सूर्यदेव और इस धरती को उठाए रखने नाले शेषनाग इन दोनों को मेरी प्रार्थना सुनाकर बुला लाइए।'' महर्षि विश्वामित्र ने जरा सोचा, फिर वशिष्ठ के कहने के अनुसार उन दोनों को बुला लाने निकल पडे।

उन्होंने सूर्यदेव से मिलकर वशिष्ठ की प्रार्थना को सुनाया। यह सुनकर सूर्यदेव ने बता दिया कि महर्षि आप की बात पर यदि मैं अपना काम छोडकर उधर आ जाऊँ तो इधर मेरा काम कौन करेगा। उसके बाद महर्षि ने शेषनाग से मिलकर वशिष्ठ की प्रार्थना को सुनाया। पर शेषनाग ने भी वही उत्तर दिया। उसके बाद उन्होंने वशिष्ठ के पास आकर सब कुछ सुनाया।

तुरंत वशिष्ठ ने महर्षि से कहा, ''ठीक ही। अब मैं अपने पास के सत्संग के फल में छे मिनट के फल को सूर्य देव और छे मिनट के फल को शेषनाग को दान में देने तैयार हूँ। आप फिर एक बार उन दोनों से मिलकर यह खबर सुना दीजिए। वशिष्ठ की बात मानकर महर्षि विश्वामित्र ने फिर उन दोनों से मिलकर दान की बात बताई।''

सत्संग फल दान की बात सुनते ही वे दोनों तुरंत वशिष्ठ से मिलने दौडे चले आए। यह देखकर महर्षि विश्वामित्र को बडा आश्चर्य हुआ। उन्होंने उन दोनों को देखकर पूछा, ''पहले आपने ऐसा कहकर इनकार कर दिया कि मेरे काम को कौन करेंगे। अब आप दोनों सत्संग दान की बात कहते ही तुरंत आ गए। अब तुम लोगों के काम को कौन करेगा?''

उन दोनों ने एक साथ उत्तर दिया कि दान में मिलता वह सत्संग फल हम दोनों का काम करेगा। अब महर्षि विश्वामित्र को मालूम हो गया कि सत्संग के फल में कितनी शक्ति निहित है। उसके बाद उन्होंने ऋषि वशिष्ठ से सत्संग के फल को बडी नम्रता से दान में प्राप्त कर लिया। उसके बाद वे अपने आश्रम की ओर आ पहुँचे। तब उन्होंने देखा कि उसके आश्रम के द्वार पर भगवान श्री महाविष्णु के बराबर दो लोग खडे हैं। उन दोनों ने महर्षि विश्वामित्र के निकट आकर कहा, ''ऋषिवर, हम भगवान विष्णु के सेवक हैं। भगवान श्रीराम के रूप में अपना अवतार लेने वाले हैं। तब श्रीराम और देवी सीता को विवाह संपन्न कराने का सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ है। भगवान ने आपको इसे सुनाने के लिए हमें भेजा है। यह सब आपको प्राप्त सत्संग के फल की प्रतिक्रिया है।''

वाल्मीकि रामायण के द्वारा हम जानते हैं कि महर्षि विश्वामित्र यज्ञ संरक्षण के नाम पर श्रीराम और लक्ष्मण को ले गए थे और तभी सीता का विवाह संपन्न हुआ था।

'क्विज'

- डॉ.एन.दिव्या

१. राजा दशरथ के पिता का नाम क्या था?

अ) हरिश्चंद्र आ) अज इ) सहस्त्रबाहु ई) बली

२. तिरुमल में ज्येष्ठाभिषेक कितने दिनों तक मनाया जाता है?

अ) एक दिवसीय आ) द्वि दिवसीय इ) त्रि दिवसीय ई) चतुर दिवसीय

३. आणिवर आस्थान के समय किस भगवान को (सोने की) मक्खियों की माला पहनाया जाता है?

अ) बालाजी आ) गणेश इ) विष्णु ई) ब्रह्म

४. आषाढ शुद्ध एकादशी का दूसरा नाम क्या है?

अ) योगिनी एकादशी आ) देव प्रबोधिनी एकादशी इ) कामिकी एकादशी ई) शयन एकादशी

५. किस ऋषि ने जनमेजय को महाभारत की कथा सुनायी?

अ) परासुर आ) वैशम्पायन इ) गौतम ई) सांदीप

६. रामायण के सबसे छोटा कांड कौन सा है?

अ) बालकांड आ) उत्तरकांड इ) अरण्यकांड ई) युद्धकांड

७. स्वामिपुष्करिणी के नजदीक में विराजमान भगवान कौन है?

अ) वराहस्वामी आ) बालाजी इ) गणेश ई) बेडि आंजनेय स्वामी

क्विज के समाधान इसी पत्रिका में हैं

चित्रकथा

झूठ मत बोलो

तेलुगु में - डॉ.के.रविचंद्रन्
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री टी.शिवाजी

बेटे का आर्तनाद सोमय्या की कान में पडा...
अहो! यह क्या है? अभी आया... इतने में ऐसा...
हाँ! आ रहा हूँ...
दौडते दौडते सोमय्या भेडों के झुंड के पास पहुँचा...
कहाँ... कहाँ है री बाघ!
अहा!... अहा!..
बाघ!... अहा!... अहा!... बाघ नहीं शेर नहीं... बडा मजाक किया न...
सोमय्या को बडा गुस्सा आया...
बदमाश! तेरी शरारत बहुत बढ गयी... अगली बार ऐसे करने पर खाल उतार दूंगा... सावधान।
सोमय्या वापस लौट गया... थोडी देर के बाद बाघ सचमुच आ गया...
रंगा! प्राणों के भय से पेड पर चढ गया। बाघ भेड को उठाकर ले गया।
बापु! बापु! सचमुच ही बाघ है! बचाओ... बचाओ...
2
रंगा की पुकार को सुन कर सोमय्या अब की बार सचमुच ही बाघ के आने पर एकीन नहीं किया। वापस नहीं आया।
खेत का काम पूरा करके आये सोमय्या जो अनर्थ हुआ जानकर बहुत दुखी हुआ। रंगा को भी अपनी भूल समझ में आयी। झूठ बोलने से होनेवाले अनर्थ को समझ गया।
कभी भी झूठ नहीं बोलूंगा बापु!
स्वस्ति।

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

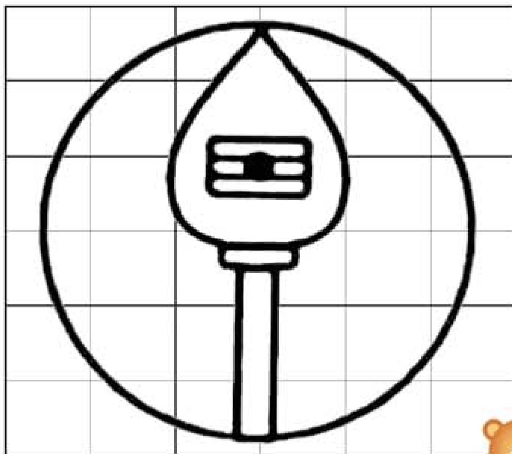

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) श्री महाविष्णु	अ) पद्मावती
2) ब्रह्म	आ) शिद्धि-बुद्धि
3) परमेश्वर	इ) लक्ष्मी
4) श्रीनिवास	ई) सरस्वती
5) गणेश	उ) पार्वती

1) इ 2) ई 3) उ 4) अ 5) आ

श्री गुरु प्रार्थना

नित्यानंदैक कंदाय।
निर्मलाय चिदात्मने॥
ज्ञानोत्तमाय गुरवे।
साक्षिणे ब्रह्मणे नमः॥

चित्र मे अंतर खोजे!

1) उड़ने वाली चिड़िया
2) बादल
3) फूल झाड़ी
4) सिर पर फूल
5) रिबन
6) पत्ते
7) एक आदमी की कमी

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

ओडिशा राज्य में स्थित भुवनेश्वर नगर में ति.ति.दे. के द्वारा नव निर्मित श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के महा संप्रोक्षण कार्यक्रम के दृश्य।

दि. 25-05-2022 को ति.ति.देवस्थान ने हनुमज्जयंती महोत्सव को अत्यंत धूम-दाम से मनाया था। इस संदर्भ में तिरुमल में स्थित आकाशगंगा के पास विराजित श्री अंजनादेवी और श्री बालांजनेय स्वामीजी को ति.ति.दे. के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मरिड्डी जी ने पवित्र रेशमी वस्त्र समर्पित किये हैं।

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-06-2022 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.

साक्षात्कार वैभवोत्सव, श्रीनिवासमंगापुरम्
दि. 03-07-2022 से दि. 05-07-2022 तक